श्रीराधारमणो जयति

श्रीराधारमण पद-मंजरी

अथवा

श्रीजी के नित्य संकीर्तन तथा वर्षोत्सव के पदों का संग्रह

नि:शुल्क

सन् 2008

श्रीमन्माध्वगौड़ेश्वराचार्य

श्रीगुरु गल्लूजी महाराज (गुणमंजरीदास) गोस्वामी

द्वारा रचित

प्रकाशक : श्रीचैतन्य महाप्रभु आदर्श ट्रस्ट, वृन्दावन

प्राचीन षड्भुज महाप्रभु

स्थापित एवं सेव्य

द्वारा : श्रीगुरु गल्लूजी महाराज गोस्वामी

श्रीगल्लूजी महाराज का
संक्षिप्त परिचय

माध्वगौड़ेश्वराचार्य परम सन्त पूज्य पाद गोस्वामीजी गल्लू जी महाराज के पिता का नाम श्रीरमण दयालजी महाराज था। श्री गल्लू जी महाराज का जन्म संवत १८८४ अर्थात् सन् १८२७ में हुआ था। इनके एकमात्र पुत्र श्रीराधाचरण गोस्वामी जी हुये। श्रीराधाचरण जी की माँ का नाम श्रीमती सूर्यादेवी गोस्वामी था। श्री गल्लूजी महाराज का जन्म तथा निर्वाण (संवत् १८८४ से १९४७ वि. सं) है।

श्रीगल्लूजी महाराज बचपन से संत प्रकृति, भक्त प्रवृत्ति के महान त्यागी सन्त थे। प्रारम्भ से ही उनके नाम के आगे महात्मा शब्द लग गया। सभी उन्हें महात्मा जी से सम्बोधित करते थे। गृहस्थ होते हुए भी वह परम विरक्त थे। गृहस्थ से, संसार से उन्हें कोई आसक्ति नहीं थी। अल्प भोजन करने वाले थे, दिन भर में मात्र एक फुल्का और साग़ पाते थे। मात्र शरीर निर्वाह हेतु, स्वभाव में अति सरल उदार तथा विनम्र थे। उनके जीवन के दो ही लक्ष्य थे। **प्रथम आत्म चिन्तन, द्वितीय श्रीराधारमण देव की उपासना**। इन दोनों कार्यों में वह प्रतिपल बिभोर रहते थे। भाषा के रूप में वह केवल बृज भाषा ही बोलते थे। अन्तिम क्षण तक उन्होंने बृज भाषा को अपनाया। उनके मुख से स्वाभाविक रूप से बृज भाषा ही निकलती थी। आपने पूर्ण जीवन पर्यन्त किसी अन्य भाषा के शब्द का उच्चारण नहीं किया।

भाषा के सम्बन्ध में श्रीगल्लू जी महाराज के जीवन का एक संस्मरण बहुत प्रसिद्ध है। लखनऊ के शाहजी श्रीकुन्दन लाल शाह श्रीफुन्दन लाल शाह जी श्री महाराज को देवतुल्य मानते थे। वह कहते थे "गुरु गल्लू जी महाराज का दर्शन कर श्रीराधारमण देव का सहज स्मरण हो आता है बहुत शान्ति मिलती है" (यह वाक्य श्रीराधाचरण गोस्वामी जी की डायरी से उद्धृत किया है)।

शाहजी साहिब के यहाँ बन्दूक चलवाने की आज्ञा श्रीगल्लूजी महाराज ने दी। यह आज्ञा प्राप्त करने लखनऊ निवासी शाहजी बहुत से व्यक्तियों के साथ श्रीमहाराज के दर्शन करने स्वयं आये तब बहुतों के मन में कौतूहल था कि श्रीमहाराज बृजभाषा के अतिरिक्त कोई शब्द प्रयोग करते नहीं है तो बन्दूक, बारूद भरकर चलाने की आज्ञा किस प्रकार देंगे। जब शाहजी साहिब ने जिज्ञासा प्रगट की तो श्रीमहाराज सहज रूप से बोले–"**लोह नलिका में (बन्दूक) श्याम चूर्ण (बारूद) भरयौ अग्नि जो दीनी तौ भड़ाम शब्द होये (भयौ) सभी गद्–गद् हो गये।** सभी ने गल्लूजी महाराज की चरण रज धारण की। इस वाक्य में बृज भाषा के शब्द का रूप तथा ध्वनि नाद कितना आकर्षण पूर्ण है।

श्रीगल्लू जी महाराज का सम्पूर्ण समय **१. बृजवासियों की सेवा, २. दीन–दुखियों की सेवा तथा ३. गऊ सेवा** में व्यतीत होता था। वह कोई भी वस्तु द्रव्य संचय नहीं करते थे। सब वस्तुओं को दे देते थे। उदार प्रकृति के कारण वह लोक व्यवहार अर्थात् संसार के व्यवहार में शून्य थे। आठों पहर वह सेवा भाव में डूबे रहते थे तथा चौबीसों घण्टे भजन तथा अपने श्रीराधारमण देव की उपासना में विभोर रहते थे। उस समय के सन्तों की भक्तों की दृढ़ मान्यता थी कि गुरु गल्लू जी महाराज को श्रीराधारमण देव का प्रत्यक्ष दर्शन वार्तालाप प्राप्त होता है।

श्रीगल्लू जी महाराज का कवि के रूप में नाम गुणमंजरी है। यद्यपि यह नाम श्रीश्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी जी महाराज का है। शास्त्रों के अनुसार विचारणीय बात यह है कि श्रीगल्लू जी को यह मंजरी नाम कैसे प्राप्त हो गया?

श्रीगल्लू जी महाराज ने गुरु परम्पराष्टक माला श्रीगोपाल भट्ट शतक श्रीभागवत पदावली आदि पुस्तकों की रचना की। जब वह **राधारमण पदावली** लिख रहे थे जिसमें साल के उत्सव तथा दैनिक सेवा पदावली है। श्रीराधारमण देव ने स्वप्न में आकर

कहा, "तू गुणमंजरी है" (श्रीराधाचरण जी की डायरी से उद्धृत) "सब पदन के छोर में लगा तब मौये स्वीकृत होयगौ"। स्वप्न में श्रीराधारमण देव ने इस प्रकार कहा–

तभी उनकी रचनाओं में प्रत्येक अन्तिम पंक्ति गुणमंजरी के नाम से है। श्रीगल्लूजी महाराज भाव में डूबे रहते, रोते रहते एवं अपने इष्ट प्राणधन **श्रीराधारमण देव के पदों की रचना करते रहते थे। आप माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय के परम दिव्य सन्त माने जाने लगे।**

श्रीराधारमण देव के संग आपके जीवन की बहुत सी निम्न– लिखित घटनायें हैं–

श्रीराधारमण देव के रहस्यात्मक तथ्य

१. श्रीगल्लूजी महाराज सदैव मंगला आरती, सेवा करते थे। किसी भी गोस्वामी की सेवा हो वह सेवा वालों के द्वार पर पहुँच कर आग्रह, प्रार्थना करते थे कि मंगला की सेवा की अनुमति मुझे दो। अधिकांश गोस्वामी उनका सहयोग करते कुछ ऐसे भी अभिमानी गोस्वामी थे जो उनकी विनती स्वीकार नहीं करते उन्हें दुतकार देते, किन्हीं सज्जन ने तो उन पर हाथ तक उठाया जब वह भोर की सेवा में नहीं जाते तो बाहर मन्दिर की सौनी सेवा करते थे। लोग उनसे पूछते थे महाराज आज आप मन्दिर नहीं गये तो रोकर कहते 'मोते' कछु अपराध है गयौ है तौ राधारमण ने 'नहीं बुलायौ' जिन स्वरूपों ने उन्हें मारा उनका वंश वर्तमान में नहीं हैं। उनका सेवा–भाव एवं विनम्रता एक उदाहरण है।

२. किसी गोस्वामी स्वरूप से भूल हो गई। ठाकुरजी के सिरहाने करुआ में जल भरना भूल गये श्रीगल्लू जी महाराज ने रात्रि एक बजे हल्ला मचाया गर्भ द्वारा खोलौ **"मेरौ राधारमण प्यासौ है"** सभी गोस्वामी स्वरूप उन पर नाराज हुये। रात में भी चैन नहीं है वह रोते रहे आग्रह करते रहे अन्त में रात्रि १.३० बजे सभी गोस्वामी स्वरूपों की उपस्थिति में मन्दिर खोला गया। श्री

गल्लूजी महाराज तथा सेवा वाला साथ गये तो देखा करुआ खाली है जल नहीं है। सभी के नेत्रों से अश्रुपात होने लगा।

३. एक बार किसी गोस्वामी स्वरूप से सेवा सम्बन्धी अपराध हो गया। वह जैसे ही मन्दिर का गर्भ द्वार खोले तभी द्वार पर काला सर्प खड़ा मिले बहुत उपाय करने पर भी द्वार से नहीं हटा तो बड़ी समस्या हो गई कि आखिर मन्दिर कैसे खुले? उस समय श्रीमहाराज ही स्नान करके आये। उनके आते ही सर्प चला गया, शान्ति से सेवा पूजा सम्पन्न हुई।

महाराज की वाराणसी यात्रा

४. एक बार बहुत आग्रह पर जीवन में एक ही बार श्रीमहाराज वाराणसी गये। यहाँ उनका बहुत ही भव्य दिव्य स्वागत हुआ। वाराणसी के प्रकाण्ड विद्वान उनसे शास्त्रार्थ का आग्रह करने लगे। अपने अभिमान को उन पर थोपने लगे। वह भक्त हृदय थे न कि तार्किक पण्डित। जब वह बहुत दुःखी हुए तब उनके प्रभु श्रीराधारमण देव ने स्वप्न में प्रगट हो आदेश दिया। धैर्य दिया तथा मात्र एक प्रश्न का उत्तर देने की सलाह दी। दूसरे दिन भोर में सभी विद्वानों ने उन्हें घेर लिया। श्रीगुरु गल्लूजी महाराज बोले—मात्र एक प्रश्न आप पूछें तो सब पण्डितों ने कहा **गृहस्थ का क्या धर्म है?** उत्तर दिया—**केवल हरि भजन एवं प्रभु की खोज करना ही धर्म है** और यह कह आंखों में आंसू भर सब विद्वत् जनों के चरणों में लेट गये। इस महान सन्त की विनम्रता देख तथा **अमानी** भाव देख सभी दंग रह गये। सभी विद्वत् जन एक स्वर से कह रहे थे महात्मा है, अमानी है सरलता की मूर्ति है त्याग की मूर्ति है। सभी विद्वत् मण्डली ने श्रीमहाराज की सराहना की तथा शत्–शत् प्रणाम किया।

ब्रज के सिद्ध संतों का मत

५. बृज के सिद्ध बाबा जय कृष्णदास (कामवन वाले) बाबा के पास कृष्णा बंगाली रहता था। वह अपने उद्धार का साधन

सदैव पूछा करता था। एक दिन वह बाबा की चरण सेवा कर रहा था तो अचानक बाबा बोले कृष्ण, इस समय ब्रज में राधारमणीय गोस्वामी सन्त शिरोमणि श्रीगल्लू जी महाराज है। अगर तू अपना कल्याण चाहता है अपना उद्धार करना चाहता है तो जा उस सन्त का सानिध्य प्राप्त कर उनकी सेवा कर। उन्हीं की सेवा से तुझ पर भगवत कृपा होगी। कामवन वाले बाबा की आज्ञानुसार वह श्रीगल्लू जी महाराज का कृपा पात्र बन गया। उसने श्रीगल्लू जी महाराज की अन्त तक सेवा की जब श्री महाराज का नश्वर शरीर शान्त हो गया, कहते हैं श्रीमहाराज की उठावनी तक लोगों ने उसको देखा। फिर किसी ने नहीं देखा। कहा जाता है महाराज के जाने के तीसरे दिन श्रीयमुना किनारे उसका शरीर शान्त हो गया। लोगों ने जब मृतक के शान्त चेहरे का दर्शन किया तो सभी ने कहा इसके लिये वैकुण्ठ के द्वार स्वयं खुल गये। सिद्ध बाब जयकृष्ण दास जी ने जब यह घटना सुनी तो बाबा के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी। लोगों से बाबा ने यही कहा सन्त और प्रभु बड़े कृपालु होते हैं।

कामवन वाले बाबा का नाम राधारमण व्रतोत्सव में उत्सव हेतु आज तक छपता है।

६. श्रीराधारमण मन्दिर में सब पद–गान, उत्सव गान आदि स्वयं जाकर करते थे श्रीराधारमण जी का जन्मोत्सव बधाई गान, होली गान आदि बहुत ही विभोर होकर स्वयं गाते थे। वह चाहते थे कि जीवन का हर–पल राधारमण की सेवा में व्यतीत हो।

श्रीराधारमण जी की दैनिक–सालाना सेवा पद्धति नियमावली श्रीगल्लू जी महाराज ने ही बनाई जो रजिस्टर में सुन्दर अक्षरों में उतरवाकर गर्भ मन्दिर में आज भी मौजूद है। सभी गोस्वामी स्वरूप आज भी उस का उपयोग कर रहे हैं। आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक सेवा वाला उत्सव आदि में उसका प्रयोग करता है।

महाराज श्री की रहस्यात्मक भविष्यवाणी

७. जब आप वाराणसी गये वहाँ आपका भव्य स्वागत हुआ। हाथी पर आपकी सवारी निकाली। अपना सम्मान होता देख वह बहुत रोये क्योंकि प्रकृति से वह अमानी थे। सात दिन भागवत प्रवचन तथा पद गान किया उस समय एक घड़ा भर कर चाँदी के रुपये भेंट किये गए। जब वह वृन्दावन चले तो शाह परिवार माधौजी खानदान एवं वीसूजी खानदान के परिवार को बुलाकर रुपयों से भरा घड़ा वहीं छोड़ दिया। सभी शिष्य ले जाने के वास्ते आग्रह करने लगे किन्तु वह धन वृन्दावन नहीं लाये और कहा इस धन का उपयोग भविष्य में वृन्दावन में ही होगा। इसे आप यही जमा कर ले शेरवाली कोठी ढठेरी बाजार वाराणसी में यह पैसा जमा रहा। सभी शिष्यों के विशेष आग्रह को स्वीकार कर एक रुपया वृन्दावन ले आये सो स्टेशन पर एक बृजवासी मिल गया। उसे दे दिया। घर षड्भुज महाप्रभु मन्दिर से खाली हाथ गये और खाली हाथ लौटकर आये। कहा जाता है कि महाराज की मृत्यु के बाद जब उनके पुत्र श्रीराधाचरण गोस्वामी विद्या वागीश जी के दो जवान पुत्रों **श्रीनिताई चरण गोस्वामी एवं श्रीगौर चरण गोस्वामी** का देहावसान हो गया उस समय श्री राधाचरण गोस्वामीजी के एक मात्र पौत्र ढाई वर्ष के श्रीअद्वैत चरण गोस्वामी परिवार में बचे। तब अपने मरने से पूर्व श्रीराधाचरण गोस्वामी जी ने एक कमेटी का निर्माण किया तथा अपनी वसीयत में लिखा कि जब तक यह बालक बड़ा न हो जाये इस घर का खर्चा तथा ठाकुर षड्भुज महाप्रभु जी के भोग–राग का व्यय वाराणसी की जमा राशि से वाराणसी के शिष्य करेंगे। समय–समय पर वृन्दावन आयेंगे।

श्रीगल्लू जी महाराज की भविष्यवाणी की यह रुपया वृन्दावन में ही व्यय होगा सत्य हुई। यह रहस्य श्रीगोस्वामी राधाचरण जी महाराज द्वारा स्वीकृत किया गया एवं उजागर किया गया। श्रीगुरु गल्लू जी महाराज महान त्यागी, दिव्य–सन्त एवं श्रीराधाचरण देव के परम उपासक थे।

ठाकुर षड्भुज महाप्रभु की स्थापना

१. गौर सेवा २. ब्रजवासी, वैष्णव सेवा ३. दीन–दुखियों की सेवा

इन तीनों कार्यों में मस्त रहकर सन्त गल्लूजी महाराज अपना समय व्यतीत करते थे। आपने भरतपुर, शाहजहाँपुर, बदायूँ, फर्रुखाबाद जाबवट आदि में मन्दिरों की स्थापना की। उसी के साथ अपने निवास स्थान पर संवत् १६३२ वि. में ठाकुर षड्भुज महाप्रभु की स्थापना की तथा उन्हें अपने घर लाये।

यह प्राचीन विग्रह ढाका से आयी थी। एक बंगाली स्त्री इस विग्रह की एक छोटी सी कोठरी में रहकर सेवा करती थी। वह श्रीमहाराज की शिष्या व अनन्य भक्त थी। वो ही इस विग्रह को श्रीमहाराज को सौंप कर परलोक सिधार गई। तभी से षड्भुज महाप्रभु के इस सुन्दर विग्रह की पूजा लगातार आज तक होती चली आ रही हैं। अब छठवीं पीढ़ी षड्भुज महाप्रभु की सेवा कर रही हैं। तीन हाथ की कोठरी ६ हाथ के ठाकुर के नाम से पहले ही यह विग्रह प्रसिद्ध है।

वंशावली

श्रीरमणदयालजी

श्रीगल्लूजी महाराज

श्रीराधाचरण गोस्वामी

श्रीनित्याईचरण गोस्वामी — श्रीगौरचरण गोस्वामी

अद्वैत चरण गोस्वामी (बच्चाजी) के तीन पुत्र

बड़े पुत्र चैतन्य गोस्वामी

आलोक कृष्ण गोस्वामी

गोपाल कृष्ण गोस्वामी — बलराम कृष्ण गोस्वामी

श्रीराधारमण जू के मन भाये। देखो गुरु गल्लू जी आये गुरु गल्लू जी आये।।
राधारमण पद रचना कीनी गुणमंजरी नाम धराये।
देखो परम गुरु श्रीगल्लूजी सब जग गाये।।

– चैतन्य गोस्वामी

अनुक्रमणिका

विवरण		पृष्ठ
१.	मंगला चरण के पद	६
२.	ज़ागरण, उत्थापन, मंगला आरती	१४
३.	मंगला आरती के श्रृंगार कौ वर्णन	१६-१७
४.	दन्त–धावन, स्नान, धूप आरती	१७
५.	श्रृंगार भोग	१७
६.	बीरी भोग, श्रृंगार आरती	१८-१६
७.	श्रृंगार वर्णन	१६
८.	श्रीप्रियाजी कौ श्रृंगार वर्णन	२६
६.	श्रीराधारमण संग रंग में विराजे	३०
१०.	राजभोग, उत्थापन	३२
११.	उत्थापन भोग, औलाई के श्रृंगार कौ वर्णन	३३
१२.	व्यालू भोग	३४
१३.	श्रीप्रियाजी कौ भोग, शयन आरती	३५
१४.	श्रीराधारमणजी के जन्मोत्सव के पद	३६
१५.	जलयात्रा, रथयात्रा, वर्षा वर्णन	६०
१६.	हिंडोला	६२
१७.	पवित्रैकादशी, सलूनो (राखी), जन्माष्टमी	६५-६६
१८.	श्रीराधाष्टमी, सांझी	६६-६७
१६.	दशहरा, शरद पूर्णिमा, दीवाली	६७-६८
२०.	अन्नकूट	६६
२१.	गोपाष्टमी, देवोत्थान अथवा प्रबोधन	७०
२२.	समय खिचरी के पद	७१
२३.	श्रीराधारमणलालजी खिचरी	७२
२४.	शीत	७३
२५.	बसंत	७५
२६.	होली	७६
२७.	श्रीमहाप्रभुजी कौ जन्मोत्सव	७८
२८.	फूल बंगला	७६
२६.	अखतीज	७६

मंगला चरण के पद

जय-जय महाप्रभु जगत वन्दन शचीनन्दन हरे।
जय अद्वैत आनन्दकन्द नित्यानन्द मनवांच्छित करे।।
जय गौर राधा भाव भूषित श्याम धामल उर धरे।
जय पतित पावन दु:ख नसावन दीन जन अंकन भरे।।
जय सकल त्राता प्रेम दाता पुलक तन अश्रु झरे।
जय कीर्ति आनन्द सिन्धु निमगन सगन व्रज ते अवतरे।।
जय रूप सनातन जीव श्रीगोपाल भट्ट रघु युग वरे।
जय वास चरनन पास मांगे मंजरी गुण अनुचरे।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

जय प्राणधन राधारमण श्रीगोपाल भट्ट जू के लाड़िले।
जय श्यामसुन्दर अधर मुरली बजत तानन आड़िले।।
जय मोर मुकुट झुकोय बांये, पीत अम्बर राज ही।
जय मकर कुण्डल श्रवण झूमें गण्ड मंडल भ्राज ही।।
जय बंक नयनन मधुर बयनन मन्द मुस्कनि मुख सजे।
जय बैजयन्ती माल उर कटि किंकिणी कलि धुनि बजे।।
जय कर कमल लकुटी सुरंगी नव त्रिभंगी छवि लसें।
जय चरन कमलन नूपुरन सुर मंजरीगुण मन बसें।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

जय जय छबीली नागरी गुण आगरी श्रीराधिके।
प्रिंय भामिनी अभिरामिनी मम स्वामिनी सुख साधिके।।
मधुर वृन्दावन विलासिन कुंज लासिन छवि भरी।
जय तड़ित गोरी नव किशोरी श्यामरस बोरी हरी।।
गुही ललित बैनी हरिन नैनी पिक सुवैनी शशि मुखी।
लसि अरुन सारी छबि अपारी पिय भुजाधारी सुखी।।
सुख सदन लालन बदन बीरी देत-लेत सुहामनी।
लखि निज सखी नैनन सिरखत मंजरी गुण गामिनी।।

१

श्रीराधारमण हमारे मीत।।

ललित त्रिभंगी श्यामसलौने। कटि-पहिरे पट पीत।।
मुरलीधर मन हरन छबीले। छके-प्रिया की प्रीति।।
गुण मंजरीं विदित नागर वर। जानत रस की रीति।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

२

श्रीराधारमण हमारे इष्ट।।

प्रभु कृष्ण चैतन्य युगल वर। मूरत मधुर महिष्ट।
सर्वोपरि है धाम मनोहर। वृन्दाविपिन वरिष्ट।।
कुंज केलि कौतुक कालिन्दी। केलि करत अति मिष्ठ।।
मन्द पवन पुलकित पक्षी। सुख पावत प्रेमा-विष्ट।।
लाल सयुत ललितादि ललित। अलिल तन लखत रति निष्ठ।।
गावत जिनकों श्रीआचारज। रूप-सनातन शिष्ट।।
गुरु गोपाल भट्ट गोस्वामी। गुण-मंजरी गरिष्ठ।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

३

श्रीराधारमण सलौने श्याम।।

नवल किशोर माधुरी मूरति। अंग-अंग अभिराम।।

श्रीवृषभानु किशोरी गोरी। शोभित सुन्दर वाम।।

वृन्दाविपिन विलासी रस निधि। गुण मंजरी सुख धाम।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

४

श्रीराधारमण छबीले छैल।।

अंग अनंग तरंग भरे है। प्रगटत जोबन फैल।।

नवल किशोरी रूप वाम में। निरखत नई-नई सैल।।

गुण मंजरी गुमानी दानी। रोकत नागरि गैल।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

५

श्रीराधारमण नट-नागर हो।।

ललित त्रिभंगी सुन्दर श्याम। अति उज्ज्वल रस सागर हो।।

संग सोहे अलबेली बाम। जिन के नाम उजागर हो।।
श्री वृन्दावन यमुना कूल वंशीवट। गुण आगर हो।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

६

प्राणधन राधारमण रंगीले।।

ललित किशोर मोर पंख धारें। चंचल नैन नुकीले।।
मुरली बजाये रिझायें प्यारी। गावें गीत रसीले।।
रूप उजारौ शोभा सागर। गुण मंजरी मन कीले।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

७

श्रीराधारमण रसिया बाँकौ।।

श्रीवृन्दावन कुंज गलिन में। रोकत डोलें नाको।।
लिये लकुटी तिरछी भृकुटी। निरखत रूप न छाको।।
गुण मंजरी जोबन गुरूर भरौ। प्यारौ लागे बाँकौ।।
म्हाँको

जागरण

जागो श्रीराधारमण रंगीले।।

सखिन दरश उत्कण्ठा बाढ़ी। बादर है आये है पीले।।
करौ शृंगार प्राण प्यारी कौ। भूषण वसन भये हैं ढीले।।
रचौ हास परिहास युगल मिल।
गुण मंजरी मनहर चटकीले।।

उत्थापन

उठे श्रीराधारमण परभात जागै रैन
सुरत रस पागे लागे गातन गात।।
अंजन अधर पीक पलकन की औछत मृदु मुसिक्यात।।
उरझे उर हारन सुरझावत गुण मंजरी जम्हात।।

मंगला आरती

मंगल राधारमण लाल। मंगलमय श्रीभट्ट गोपाल।।
मंगल आरति अति अनुपाम। मंगल निशि बीती अभिराम।।
मंगल नित्य धाम वृन्दावन। मंगल द्रुम बेली मन भावन।।

मंगल नवलकुंज चहुँ ओर। मंगल सुन्दर पवन झकोर।।
मंगल वृन्दा कौ उपदेश। मंगल प्रेम पुलक आवेश।।
मंगल बोलन सब पच्छिन की।
मंगल जुगल केलि छिन छिन की।।
मंगल जगावन मंगल गावन। मंगल बीन बिभास बजावन।।
मंगल रोम-रोग रस पागन। मंगल अंग-अंग सौं लागन।।
मंगल पीत नील पट उरझन। मंगल नख छत्त लागे उरजन।।
मंगल अंकित दशन कपोल। मंगल पलकन पीक तमोल।।
मंगल अधरन अंजन अंक। मंगल शोभित बदन मयंक।।
मंगल विथुर कुटिल अलकन की।
मंगल मृदु मुसकनि झलकन की।।
मंगल चलन नैन बानन की। मंगल धनु भृकुटी तानन की।।
मंगल टूटन नव हारन की। मंगल बिखरन बहु तारन की।।
मंगल कंचुकी के बन्द टूटन। मंगल नव नागरि रस लूटन।।
मंगल मिल बैठन दोऊन की। मंगल बिछुआ नूपुर धुन की।।
मंगल जुर आवत सखियन की।
मंगल रूप लखन अंखियन की।।
मंगल गुण गुणमंजरी गावत।
मंगल युगल निरखि सुख पावत।।

मंगला आरती के शृंगार कौ वर्णन

श्रीराधारमण लाल जी के रूप मन बिकायौ।
सुन्दर घनश्याम वरन नैनन में छायौ।।१।।
फैंटा इक पेच छोर सीस पै सुहायौ।
तिरछौ ही पीत वरन झालर झलकायौ।।२।।
आलस भरे नैन चैन निरखत ही पायौ।
चन्द्र बदन हंसत हीर कुण्डलन लुभायौ।।३।।
तैसौई पट पीत अंग सखिन नें सजायौ।
मुक्तन की माल लाल चित लें बसायौ।।४।।
अंग-अंग छबि तरंग रसिकन मन भायौ।
तनि याँकों तनक हेरि सब ही बिसरायौ।।५।।
वाम भाग प्रिया रूप अति ही सरसायौ।
गुण-मंजरी श्रीगोपाल भट्ट जू बतायौ।।६।।

दन्त-धावन

करत श्रीराधारमण दांतन।।
यमुनाघाट मिले कुंजन में। करत रसीली बातन।।

प्यारी जिभी करत प्रिय झुकि के।

निरखत छवि उरजातन।।

कुल्ला करत किलोल। प्रगट गुण मंजरी धावत हातन।।

स्नान

श्रीराधारमण करत स्नान।।

विविध सुगन्धि लगाय उबटनौं। कीनों सखि सुख भान।।

मधुर श्रीयमुना जल की। झारी डालत रूचि कौं जान।।

अंग अंगोछ धीर गुण मंजरी। सिंगारत पट आन।।

धूप आरती

अगर धूप कौ धूम सुहायौ।।

चन्दन चूर कपूर उसीरन मिलि कुंजन नव घन सौ छायौ।।

हेम आरती बाती बिजुरी घण्टा रव गरजन मन भायौ।।

गुण मंजरी मोर कुहुकत है निरख श्रीराधारमण सुख पायौ।।

शृंगार भोग

भोग मधुर आयौ शृंगार, पावें श्रीराधारमण लाल।

मोती चूर मगद के लड्डू गुजिया मठरी फेनी सहार।।१।।

सेब सकल पारे तिर कौना मधुर सलौने कंचन थार।
बूंदी मोहन भोग जलेबी सरस इमरती अति रुचिकार।।२।।
पेड़ा पूरी खोआ कुल्हिया माखन मिश्री मेवा डार।
दही कचौरी पापड़ चटनी तरकारी रायतौ रसाल।।३।।
बेढ़ई बेसन टिकिया टैंटी कचरी लौंजी विविध अचार।
प्राण पियारी श्रीकर परसत गुण मंजरी नव स्वाद अपार।।४।।
भोग श्रृंगार श्रीराधारमण आरोगत कुँजन संकेत।
अपनी प्राण प्रिया के निरखत परसत तृप्त नहीं दृग चेत।।५।।
दाड़िम नारंगी आदिक फल मेवा माखन सिता समेत।
कछुक सलौने लै श्रीयमुना जल सुवरन झारी भर मुख लेत।।६।।
अचमन कर श्रीमुख हस्तन पद पौंछत हैं सुन्दर पर श्वेत।
नव नागरी रहस अधरामृत चाखत कछु गुण मंजरी देत।।७।।

बीरी भोग

रूप मंजरी बीड़ी लाई।।

नागर पान केवड़ों कत्था मुक्ता चूनौ लगाई।।
गिरी इलायची पान सुपारी लौंग कील दरसाई।।
गुण मंजरी युगल मुख राखी कछुक प्रिया अधिकाई।।

शृंगार आरती

करत आरती सखि शृंगार।।

गौचारण दिन कर पूजन मिस भये दोऊ कुंजन अभिसार।।
श्रीवृषभानु किशोरी राधारमण की नन्दकुमार।
नेह भरी सहचरी भावमय थाल सुरति की बाती वार।।२।।
हँसन कपूर सुगन्धित लोचन कमल उतारत निर्मल बार।
बाजत वंशी बीन सरंगी नव मंजरी मृदंग सितार।।३।।
कंकण झंकण क्रण नूपुर की सुर झालरी भ्रमर झंकार।
सब सखि जय बलिहार करत हैं गुण मंजरी करे चमर व्यार।।४।।

शृंगार वर्णन

ललित शृंगार रमन को निरखत श्रीराधा मन मनहि सिहावै।।
आरसि में प्रतिबिम्ब लखत पुनि अंचल ओट मृदुल मुसिक्यावै।।
नर्म विशेष विसाखा कर गहि सैनन में कछु भाव बतावै।।
गुणमंजरी दुहुन छवि ऊपर वारि फेरि पीवत सुख पावै।।

श्रीराधारमण सिर मुकुट सोहे

मोर चन्द्रिकन को चित चोरे जो जोहै सो मोहे।।
प्रिया ओर झुक रहयौ प्रणय बस बरणि सकै सो को है।।
गुण मंजरी छटा निरखत ही रति पति गर्व खसौ है।।

निरखि सखि राधारमण सिर पाग

सूही अर्धभाग झुकि आई प्रगट प्रिया अनुराग।।
रतन जटित सिरपेच कलंगी तुर्रा लखत सुभाग।।
मोर पंख की हलन पेच विच गुण मंजरी मन लाग।।

श्रीराधारमण जू चीरा पहिरो

अरुन पीतधारिन नारिन कौ कैसे कह मन ठहरो।।
कैसे तात रंग में तुर्रा धिर जो रहत सुनहरो।।
गुण मंजरी मन न ढूंढो बूड़ो रंग जुग हरो।।

बंधौ श्रीराधारमण सिर फैंटा

रंग गुलाबी छैल छबीलौ डारत मनै अमैठा।।
देखत तरुणी अंग सुधि, नाहीं कहा माल कहाँ ठेठा।।
गुण मंजरी लखत नहीं हारै लगी रूप की पेंठा।।

श्रीराधारमण सीस पर कुलही

सोहें बांकी बनत अनूपम अति शोभा को उलही।।

निरखत नैन निमिख नहीं लागत मोही सुन्दर दुलही।।
गुण मंजरी गोट गोटा को नखत नैलगति भुलहि।।

श्रीराधारमण धरी सिर टोपी

मोतिन लगी गोखरु किरनन फूल झलक आरोपी।।
बंक भाल झुकि रही अलक छवि निरखों है सब गोपी।।
गुण मंजरी किनारी लचका लियौ नारिन चित चोपी।।

श्रीराधारमण केसर तिलक

देखि सखि वर भाल शोभा रहयो कैसो झलक।।
ललित पत्रावली कपोलन लखि न लागे पलक।।
हरि विन्दी बाल गई गुण मंजरी मन किलक।।

श्रीराधारमण कुण्डल कान

मकर आकृत देखते ही ग्रसे मीनन यान।।
भूल मत देखै सखी री सीख मेरी मान।।
मंजरी गुण रुप सागर रसिक नागर जान।।

श्रीराधारमण कटाक्षन बान

वेधत गोपीजन मन हरिणी छूटे भृकुटी कमान।।
निकसत नहीं कसकन निशि वासर ससकत रहत जु प्रान।।
गुण चुम्बक मन परसत होत दुःख की हान।।

श्रीराधारमण नुकीले नैन

वेधे बृज जुवतिन मन माणिक कहत बने नहि बैन।।
कल न परत पल मेरी सजनी कहा दिवस कहा रैन।।
गुण मंजरी बड़े चंचल हैं अंचल सौ करै सैन।।

× **श्रीराधारमण नासिका कीर**

परसत नहीं बिम्ब मधुरे फल चुगत गोपिका धीर।।
बेसर बीज अनार कभू गहे पिये लाज कुल नीर।।
गुण मंजरी चित चौच लगी है को जानें यह पीर।।

बसी उर राधारमण मुसिक्यान

नहि भावे विध औ निषे कछु नहीं लोक कुल कान।।
पूरण मुख शशि चांदनी निरखत दृग चकोर सम जान।।
कुन्दकली दशनावलि शोभा गुण मंजरी पहचान।।

श्रीराधारमण अधर रचि वीरी

नपन सकल करले हुरी आली निरखत रहो छबी री।।
श्रीललिता जू ने मुख दीनी कैसे अधर फबी री।।
गुण मंजरी प्यारी बीरी रंग बरनै कौन कवीरी।।

× **श्रीराधारमण चिबुक चित चोरे**

ऊँची उचित सुहावनी लागे गाड़ माहि मन बोरे।।

प्रिया हस्त परसत प्रमुदित अति बरषत रंगन थोरे।।
गुण मंजरी बेंदी हीरा की लखि जियरानहिं घोरे।।

श्रीराधारमण कण्ठ की दुलरी

गोल गोल मोतिन की दुलरी शोभा देत अतुल री।।
जुगनी दुगनी ओप विराजत निरखि भई बाउल री।।
गुण मंजरी मन लटकन मन अटकन चटकन मंजुल री।।

श्रीराधारमण हिय के हार

मोतिन्न पन्नन चुन्निन के सखि नैन निहार।।
चमकत चहुँ धुकधुकी मिलके कैसे देत है बहार।।
चमकत चहुँ घाते लख याते गुण मंजरी मणिहार।।

श्रीराधारमण लाल कौ वागो

कैसे फवि रहौ श्याम अंग में पीत वरन अनुरागौ।।
देखन मोहू को आली छोड़ि देहु टुक आगौ।।
निरखत नैनन वही नहिं तन कहुं गुण मंजरी मन लागौ।।

श्रीराधारमण नौ रतन बाजू।।

कैसे बाहु बीच में राजे पोये रे सम काजू।।
फुंदना फन्द फंसे मनसु चतुर निरखत सकल समाजू।।
गुण मंजरी निमिष अब लोकै पकरे चौखट बाजू।।

श्रीराधारमण लाल के गजरे

मोतिन को मन हरे लेत है लखि छबि कौ अचरज रे।।
शोभा सिन्धु श्याम के अंग में मनु आये रे बजरे।।
गुण मंजरी मन थमों वहाँ ही धार लियौ धीरज रे।।

श्रीराधारमण लाल कर कड़े

छोटे छोटे रुचि सरकीले सुवरन रतन जड़े।।
निरखि न अघात जात सखि कहूँ नैना निडर अड़े।।
गुण मंजरी घुन्डी में घूमें मनके बड़े-बड़े।।

श्रीराधारमण लाला हथफूल

रतन जड़ित मोतिन लर बहुधा धारे सुभग अमूल।।
मनहुँ सखिन मन हाथ आय गये कर लिये अनुकूल।।
गुण मंजरी द्रक कहा चलाई आपहिं रहें जु भूल।।

श्रीराधारमण कमल कर रेख

लाल लाल मेंहदी बिच कैसी शोभित हे सखि देख।।
अँगुली प्रवाल काल मन मोहै छोड़े नैन निमेख।।
मंजरी गुण नख चन्द चकोरी धन्य-धन्य कर लेख।।

श्रीराधारमण दुपट्टा छोर

लखत खटका मिटे मन के बसे ताही ओर।।

पवन बिन फहरात सुन्दर दोऊ कन्धा जोर।।
मंजरी गुण कटि लपट रहयौ वारो बिजुरी करोर।।

श्रीराधारमण जू धोती धारी

वरण कपूरी अति छवि पूरी कोर लाल सुखकारी।।
दरसे अंग रंग वरसे री कोमल मिहीं महारी।।
गुण मंजरी लाग की चुन्नट शोभा कहूँ कहारी।।

श्रीराधारमण काछिनी काछें

वरण विचित्र घेर अति सुन्दर निरतत घूमत आछें।।
वेग हि हरष बिशखि मन माहीं लावनहि आमें पाछें।।
गुण मंजरी जतन कर बांधी स्वामिन कृपा कटाछें।।
उरसी मुरली कुरसी राधारमण काछनी काछें।।
कसरी सौं खचि नहिं दुति कमरी समरी आगे पाछें।।
लेत इजार दुजारे चित को नृत्य चलत ही आछें।।
मंजरी मुकुट झुकों या छवि लखि रूकौं जु प्रिया कटाछें।।

श्रीराधारमण किंकणी बाजे

सुनत बोल जाको अति रसमय हंसन छौना लाजें।।
तार जाल मन मीन उलझ रहयौ कीजे कहा अब काजें।।
गुण मंजरी जड़ाव अड़े द्रग मोहत सकल समाजे।।

श्रीराधारमण लाल की सूथन

पीत रंग की अंग लसी है प्रगटत शोभा नूतन।।
बृज नवला अवलन के चित को चोरत नारे गूथन।।
गुण मंजरी हरी भई लखिकें सूचत सखियन जूथन।।

श्रीराधारमण जांघिया धारो

अरुण रंग अति लसौ मन प्रेम छकी न सुधारो।।
चरण-चरण पैं धरें सखी री नटवर रूप उजारो।।
गुण मंजरी सीस पर जूरौ मुरली मनोहर प्यारौ।।

श्रीराधारमण चरण में नूपुर

झुमक झुमक कर बजे चले जब श्रीवृन्दावन भू पर।।
कबहू बिना चलेहू आप ही प्रगटे ललित मधुर सुर।।
गुण मंजरी चरण सुखदाई बसे चित्त के ऊपर।।

श्रीराधारमण चरण में झाँझन

मोती की गहि कनक तार में चलत बजे झनाझन।।
बीच जड़ाव अड़ाव गु चित को निरखत प्रात ससाझन।।
गुण मंजरी बजावत झाँझन मिलि गावत रस झाँझन।।

श्रीराधारमण चरण में चूरा

रतन जटित सुवरन को सोहै शोभा भई भरपूरा।।

सब ही कौ मन हरे लेत है चित्त भयौ है चूरा।।
गुण मंजरी मुदित लखि गावै लीये हाथ तमूरा।।

श्रीराधारमण लाल की गुलफ

देखि सखि अति ही शोभा भरी सुखमय सुलफ।।
छवि तरंग मन उड़े बबूला रूप भवन के कुलफ।।
गुण मंजरी चरण चापत लखि परसे अपनी जुलफ।।

अरुण चरण श्रीराधारमण के

कोमल कमल सुगन्धित सीतल हरत ताप तिप द्रग तनमन के।।
ध्वज वज्रांकुश ललित अंक जुत भूषण वृन्दा विपिन भवन के।।
गुण मंजरी नख चन्द्र चकोरी जीवन धन प्रियव्रत सखियन के।।

श्रीराधारमण चरण तल मेंहदी

कैली रची खची मो हिय में निरखों जाय अलहदी।।
बसी नैन मेरे सजनी कैसे बनी जु कहदी।।
गुणमंजरी लखें याही कौ और कछु नहिं चंहदी।।

श्रीराधारमण चरण की चौकी

हीरा रतन जटित सुवरन की शोभा हरत त्रिलोकी।।
सुन्दर गद्दी ऊपर राजे लखि नवग्रह गति रोकी।।
छवि रंजित बंदित रसिकन की गुण मंजरी अवलोकी।।

श्रीराधारमण लाल की गादी

मोती रतन जटित मखमल की झलकी रस मरजादी।।
ऊपर छन्न छबीलौ मुक्ता लटकन चित अहलादी।।
गुण मंजरी गुद-गुदे गेंदुआ निरा प्रेम उनमादी।।

श्रीराधारमण मुरलिया बजावै

कर कमलन धर अधर परस के अद्‌भुत छवि सरसावै।।
एक-एक धुन में न्यारे-न्यारे सुर दरसावै।।
गुण मंजरी गोपाल रुप हरि राधे-राधे गावै।।

श्रीराधारमण लाल कर छरी

सुन्दर रतन जटित सुवरण की अद्‌भुत शोभा भरी।।
श्रीहस्तन अरुणाईं झलकत बरसत मांद झरी।।
गुण मंजरी गैल में गोपी रोकत ही पकरी।।

श्रीराधारमण लाल कौ बट्टा

प्यारी हू की छवि उजियारी दायिन सहित दुपट्टा।।
पूरण ससि सम मणिन रहयौ लसि प्रतिबिंबित छवि अट्टा।।
गुण मंजरी मन मुदित भयौ लखि नैनन की तह सट्टा।।

श्रीराधारमण की पीकदानी

लगे रहत श्रीवदन अधर ढिंग पिय प्यारी रुचि जानी।।

चिर जियौ ये नैन जु प्यासे प्यावत छवि मुसक्यानि।।
श्रीगुणमंजरी करत सुशिक्षा समय-समय अनुमानी।।

४ श्रीराधारमण की पादुका हेरि द्रग
स्वरण हीरा रतन जटित शोभाधरन।
खूटि के कमल की खिलन कू निरख मग।।
चलन में शब्द अति होत है चमक क्रत।
सुनत ही थकित श्रुति झुकत आवे सुपग।।
महक ले हाथ पर प्रेम सों गाथ।
धरा आस बहु भात कर मंजरी गुण सुभग।।

श्रीप्रियाजी को शृंगार वर्णन

नवल शृंगार निरखि राधा को लैं दर्पण प्रिया रमण दिखावें।
बलिहारी श्रीरंगीली छबि की सब देखत ही आवै।।
नीली सी कंचन तारी दामन लामन मन भरमावै।
शुभ नवरंगी कुच पचरंगी चोली चतुरमणि चित चुरावें।।
मोर चन्द्रिका बिथुरी अलकावली ललो दृग मृगन घावै।
खंजन नैनन अंजन रंजन भाल तिलक बेंदी छबि पावै।।
बेसर लटकन नासा शुक चटकन करन फूल की भावै।
उर नवहार श्याममणि नायक शुभदायक नवरत्न भुजा में।।

हेम नीलमणि चूड़ी कंकन मुदरी आरसी रूप झुकावें।
कटि किंकिण पग नूपुर मृदु सुर महंदी जावक सरसावै।।
जय-जय ध्वनि सब कहत अनुचरी अति अनुराग मिलि गावें।
बीरी दें नागर अधरन में, गुण मंजरी पुनि चमर ढुरावै।।

५ श्रीराधारमण संग रंग में विराजे

श्रीब्रजेन्द्र भानु राज लाड़िली जू सोहे आज निरखत
सहचरि समाज कोटि रमा लाजें।।
विद्युत वर अंग प्रभा दमकत है सकल सभा सुन्दर
घनश्याम प्रभा सारी तन साजे।।
कोटि-कोटि पूर्ण चन्द्र शोभित हैं मुख अमंद हीर
दसन हंसन मन्द प्रिय कोर काजै।।
स्निग्ध असित केश रचित वेणी सौभाग्य देश सुन्दर
रेखा सुवेश मुक्तालर छाजें।।
चंद्रिका की चटक भाल शोभित है वेंदी लाल वरुणी
भृकुटी रसाल दृग काजर आँजें।।
कर्णलता टंक लास मुक्ता शुक ललित नास अधरन
वीरी विलास रसिकन सिरताजै।।

चिबुक बिन्दु मदुकु रंग लालन कौ बढ़ै रंग कम्बु कन्ठ
छवि तरंग मुक्तमाल भ्राजै।।
मोहन माला सुचारु सोई भानुजा धार नहीं है जाकौ
उतार छवि सागर राजै।।
रतन के बाजू बन्द शोभित है भुज द्वन्द्व कंकण
झंकण सु छन्द सपत्नी पराजै।।
उरज कनक कलश हरे नागर रहे नैन भरे नाभि
गंभीर फेर शोभा अनदाजै।।
क्षीणी कटि किंकिणी नव अतरौटा आछौ फब बटुआ
कौ लखि वैभव बटुआ मन लाजै।।
प्रीतम मन वृत्ति नटत जंघा वर जानु लखत चरण
कमल ललित सुरन नूपुर सुर बाजै।।
अनवर बिछुआ विशेष छबि न कहौ जात लेश सुमिरत
ही सुख अशेष सबरे दुःख भाजै।।
जावक मेंहदी कौ रचन कही नहिं जात बचन पूरण
शशि नखन जाति वृन्दावन भाजै।।
गुण मंजरी चरण रेख स्वामिनी की नयन देख जीवन
निज सकल लेख बोलिये सन्दाजै।।

राजभोग

श्रीराधारमण करत हैं भोजन
बैठे नवलकुंज अलबेले भीजे रंग मनोजन।।
घूंघट ओट छबीली निरखत परसत हस्त सरोजन।।
गुण मंजरी मोहन के नैना लागे जाये उरोजन।।
परसत रमण को सुखदानी।।
वचनामृत रसना करछी सौ घूंघट पट में छानी।।
बहु व्यंजन श्रवणन दोनन में मिल कपूर मुसक्यानी।।
होत न तृप्ति श्याम की रसना पुनि गुण मंजरी आनी।।
श्रीराधारमण जमुना तट कुँज
भोजन करत प्रियां मुख निरखत बरसत है रज पुंज।।
श्रीवृन्दा दिक सखी फल लाई पावत हैं अति मंजु।।
गुण मंजरी निज करन परोसत भ्रमर करत कल गुंज।।

उत्थापन

करत धनाश्री सुर आलापन।।
प्रेम भरी सहचरि वीणा ले जानि समय उत्थापन।।
करन लगे शुक-सारि चरचा निज निज मति सुरथापन।।
श्रीराधारमण जगे गुण मंजरी सुनि मृदंग मृदुथापन।।

उत्थापन भोग

उत्थापन भोग धरौ है उज्ज्वल।।

भरे धूप ध्वाये श्रीकर मुख सखियन श्रीयमुना जल।।
पावें राधारमण मनोहर मोदक मठरी नव फल।।
तप्त जलेबी भुरभुरी टिकियां पनोदाल बहुघृत तल।।
गुण मंजरी की वृन्दा रुचि सरस इमरती निर्मल।।
औरहु मधुर सलौनी रुचि सौ चाखत सुन्दर श्यामल।।

औलाई के श्रृंगार कौ वर्णन

बनी है आज अनूपम झांकी।

राधारमण लालजी की सखि औलाई तनियाँ की।।
अंग-अंग भीजे अतरन में धारी कुलही बाँकी।।
गुण मंजरी हिये में बैठी चपल नैन अनियाँ की।।

मेरे परत हिये में लीकें।।

श्रीराधारमण लालजी की सखि रूप माधुरी पीकें।।
अंग-अंग छवि कही न जाई श्रीवृषभानु लली के।।
छकी रहों निस वासर हो संग गुण मंजरी अली के।।

व्यालू भोग

श्रीराधारमण जू वियालू कीजै।।

मेवा की पूरी अति निर्मल मोहन भोग ग्रास संग लीजे।।
रुचिर कचौरी खस्ता टिकिया तरकारी चटपटी चटनी सौ।।
विविध अचार मुरब्बा भाजी पापर दाल तली बहु घी सौं।।
तप्त जलेबी सरस इमरती खुरमा खजला बुंदू फैनी।।
सेब सकल पारे मृदु मठरी गुजिया गूंथी नव मृग नैनी।।
छोट माल पुआ घृत चूबत मिश्री कर ऊपर ते सोहै।।
मोदक मोती चूर मगद के बेसन के सोंधे मन मोहे।।
बीच-बीच में बड़ा सलौने मधुर रस बड़ा फूले नीके।।
खोआ खुरचन रबड़ी लच्छा बरफी पेड़ा भावत जी के।।
रचे मलाई फल बहु भांतिन रंग-रंग सुरभित सुखदाई।।
कन्द कपूर पाठ पेठे को इलायची पागी अति मन भाई।।
चीला तुरत उतारे घृत में चित सुगंध मिलो रुचिकारी।।
धरे निमौना भर-भर दौना तिरकौना तिलगिनी सुहारी।।
रचौ रायतौ बथुआ बूंदी किस मिस कौ मीठो मनभावन।।
लेऔ स्वाद प्रिया मन रंजन गुण मंजरी कर कंजन पावन।।

श्रीप्रियाजी को भोग

प्यारी प्रिय अधरामृत प्यावे।।

ललितादिक सब सखिन संग में तन पुलकित मुसिक्यावै।।
महाभाव रुपणी श्रीश्यामा जिन कौ और न कछु भावै।।
गुण मंजरी निज करन परोसत निरखत नैन सिरावै।।

शयन आरती

श्रीराधारमणजी के नैनन में नींद भरि आई।।
सब सखि मिलि करत दरशन देखें पलक झपकाई।।
महाभाव रुपड़ी श्रीश्यामा हाथन-हाथ शयन कक्ष ले जाई।।
गुण मंजरी आँखन मूंद जा छवि पै बलि-बलि जाई।।
श्रीराधारमणजी के नैनन में नींद भरि आई।।

सम्पूर्णम्॥

श्रीराधारमणजी के जन्मोत्सव के पद

जै जै श्रीचैतन्यनिधि मंगल गाइये।।
सच्चिदानन्द स्वरूप सदां सुख दाइये।।१।।
प्रेम आवधि ललित लीला अधिकाइये।।
ऐसे गौरकिशोर सदां उर ध्याइये।।२।।
ध्याहरे गौरांगसुन्दर निरखि नैन सिराइये।।
भज सच्चिदानन्द जगतबन्दन विविध ताप नसाइये।।३।।
पतित पावन विरद जाको बड़े भागन पाइये।।
किशोरीदास मंगलनिध जै जै श्रीचैतन्य गाइये।।४।।

जै जै श्रीगोपालभट्ट जू सर्वदा
श्रीलकृष्ण चैतन्य महाप्रभु प्रिय सदा।।१।।
श्रीयुत रूपसनातन संग विराजहीं।।
श्रीवृन्दावन मध्य रसिकनृप राजहीं।।२।।
राजहीं जमुनापुलिन वर कुंजमंजुल अघटहीं।।
नन्दसुत वृषभानु जा लीला बिविथल प्रगटहीं।।३।।
सिद्ध बचनतें विमुखदल प्रभु अखिल जग निस्तारहीं।।
सारश्रुति श्रीभागवत मति भक्तिवर विस्तारहीं।।४।।

२. जै जै श्रीगोपालभट्ट कुमुदनि ससी।।
उमग्यो प्रेम समुद्र क्षुद्रतृष्णा नसी।।१।।
मेटत माया धाम नाम भीज़्त मसी।।
श्रीवृन्दावन धाम श्याम श्यामा बसी।।२।।
बसी वन में श्यामश्यामा अंग अंग निरखि लसी।
उदित निशिवासर सदांही हरत हैं कलि कमल सी।।३।।
सुखद है भक्तन चकोरन रटत ही निर्मल यसी।।४।।

३. जै जै श्रीगोपालभट्ट रसिकन मणी।।
अंगछवि लज्जित हेम प्रेमरत्न नखर्णी।।१।।
श्रीयुत रूपसनातन भ्रातनजीवनी
प्रीतिरीति संदर्भगर्भवाणी भणी।।२।।
भनीवाणी प्रेमसानी जुगल सुखदानी घनी।।
गौरकीर्तन मधुरनिर्तन राधिका रमणी धनी।।
करुणासिंधु अनाथबंधु कहि परत नहिं गुणगणी।।४।।

४. जै जै श्रीगोपालभट्ट प्रिय करकली।।
प्रभुकृष्ण चैतन्य कंजपद मधु अली।।१।।
श्रीवृन्दावन कुंज मंजु रास स्थली।।
दीनी राधारमण चरण सेवा भली।।२।।

श्रीराधारमणजी के जन्मोत्सव के पद

जै जै श्रीचैतन्यनिधि मंगल गाइये।।
सच्चिदानन्द स्वरूप सदां सुख दाइये।।१।।
प्रेम आवधि ललित लीला अधिकाइये।।
ऐसे गौरकिशोर सदां उर ध्याइये।।२।।
ध्याहरे गौरांगसुन्दर निरखि नैन सिराइये।।
भज सच्चिदानन्द जगतबन्दन विविध ताप नसाइये।।३।।
पतित पावन विरद जाको बड़े भागन पाइये।।
किशोरीदास मंगलनिध जै जै श्रीचैतन्य गाइये।।४।।

१ जै जै श्रीगोपालभट्ट जू सर्वदा
श्रीलकृष्ण चैतन्य महाप्रभु प्रिय सदा।।१।।
श्रीयुत रूपसनातन संग विराजहीं।।
श्रीवृन्दावन मध्य रसिकनृप राजहीं।।२।।
राजहीं जमुनापुलिन वर कुंजमंजुल अघटहीं।।
नन्दसुत वृषभानु जा लीला बिविथल प्रगटहीं।।३।।
सिद्ध बचनतें विमुखदल प्रभु अखिल जग निस्तारहीं।।
सारश्रुति श्रीभागवत मति भक्तिवर विस्तारहीं।।४।।

२. जै जै श्रीगोपालभट्ट कुमुदनि ससी॥
उमग्यो प्रेम समुद्र क्षुद्रतृष्णा नसी।।१।।
मेटत माया धाम नाम भीज़्त मसी।।
श्रीवृन्दावन धाम श्याम श्यामा बसी।।२।।
बसी वन में श्यामश्यामा अंग अंग निरखि लसी।
उदित निशिवासर सदांही हरत हैं कलि कमल सी।।३।।
सुखद है भक्तन चकोरन रटत ही निर्मल यसी।।४।।

३. जै जै श्रीगोपालभट्ट रसिकन मणी॥
अंगछवि लज्जित हेम प्रेमरत्न नखर्णी।।१।।
श्रीयुत रूपसनातन भ्रातनजीवनी
प्रीतिरीति संदर्भगर्भवाणी भणी।।२।।
भनीवाणी प्रेमसानी जुगल सुखदानी घनी।।
गौरकीर्तन मधुरनिर्तन राधिका रमणी धनी।।
करुणासिंधु अनाथबंधु कहि परत नहिं गुणगणी।।४।।

४. जै जै श्रीगोपालभट्ट प्रिय करकली॥
प्रभुकृष्ण चैतन्य कंजपद मधु अली।।१।।
श्रीवृन्दावन कुंज मंजु रास स्थली।।
दीनी राधारमण चरण सेवा भली।।२।।

भली राधारमण सेवा दई गोपीरस पली।।

परम आनंद कंद साखा रसिक अभिलाषा फली।।३।।

रूप माधुरी पिवत अनामष दिवस निशि दृगऩाचली।।४।।

५. जै जै श्रीगोपालभट्ट गुणमंजरी।।

क्षणक्षण नव अनुराग भावकी पंजरी।।१।।

लिये सेवा उपहार थार कर कज री।।

पीवतरूप अनूप नैन की अंजरी।।२।।

अंजरी भरि रूप पीवत जीवत निशिदिन संजरी।।

लवंग श्रीरतिमंजरी युत वीण मिरदंग मंजरी।।३।।

सुरन मिलि गावत बजावत कोऊ नहिं ज़हाँ जंजरी।।४।।

६. अथ बधाई

जै जै जै श्रीराधारमण श्यामसुन्दर

नवत्रिभंगी ललित वंशीवदन।।१।।

पाग लटपटि सीस लसौ है मोरचंद्रक चलन।।

तिलक केशर भाल बेंदी हीर कुंडल श्रवन।।२।।

भृकुटि काम कमान खंजन नैन बांके सरन।।

विथुरी अलक कपोल राजै पत्र सुन्दर रचन।।३।।

नासिका शुक मोति बेसर दसन दाड़िम वरन।।

बिंब अधरन मधुर मुसकन चिबुक चितकी चुभन।।४।।

कंबुग्रीवा स्कंध पट्टुका मुक्तामाला धरन।।
केयूरकंकण नाल भुजमें रक्त कमल सु करन।।५।।
विशालपक्ष सुवैजयंती माल पचरंग लसन।।
उदर त्रिवली परत नाभि गंभीर मन की वसन।।६।।
पीतपट चटकील ऊपर किंकिनी की कसन।।
सु नितंब ऊरू जानु सम शोभा नही है कवन।।७।।
रक्तपद्म सुचरण नूपुर हंस की सी बलन।।
नख चंद्र मणि की कान्ति झलमल सकल तम की हरन।।८।।
वामरूप अनूप भूषित वसन भूषण सवन।।
प्रिया श्रीवृषभानुजा नव संग घूंघट करन।।९।।
आधीन तिन कैशोरवय परिहास सुख के बचन।।
कुंज कुसमित श्री यमुनतट मधुर वृन्दा बिपिन।।१०।।
कोकिला सुख सारि सिखि अलि जुगल गुण की कलन।।
त्रिविधि पवन झकोर द्रुम मकरंद की है रुरन।।११।।
बीन मिरदंग मंजरी स्वर की सदा है भरन।।
ललिता विशाखा रूप में जरि संग रस की दरन।।१२।।
प्रेम सों सेंवा करत सो नहीं आवन वरन।।
नित्य श्रीगोपालभट्ट गुण मंजरी सुख सरन।।१३।।

राग सारंग

पूर्ण साखी सखी अभिलाषी राधारमण मिलाइ।।
श्रीवृन्दावन राज सुहावन करें अभिषेक महाई।।१।।
मणिमय खंभा रोपै रंभा बंदनवार बंधाई।।
शुभ चंद्रातप री के आतप ध्वज पताक फहराई।।२।।
चौंकस मुक्ताफल अनयुक्ता कनक कुम्भथिरकाई।।
रचौ सरोवर रुचिर मनोहर स्नान वेदि ता भांई।।३।।
दोऊ जन भेटे सुख सों बैठे नैनन में बतराई।।
अभरत मोती लालन धोती पटका पाग सुहाई।।४।।
तिय सुकुमारी झीनी सारी भूषण रूप संदाई।।
कोई लिये छत्र कोई फलपत्र सु कोई चमर डुलाई।।५।।
कोई मोर छल कोई लै उत्पल कोई घंटान बजाई।।
कोई लै पंखी करत निसंखी कोई दरपण दरसाई।।६।।
कोई झालरी कोई करताल री सुर घड़ियाल मिलाई।।
कोई मिरदंग कोई मुँहचंग सारंगी लहराई।।७।।
कोई सखी बीणा परम प्रबीणा गामें सुरन उठाई।।
कोई नांचत कोई पुस्तक बाँचत वेद ध्वनि नभ छाई।।८।।

कोई रसमर्दन कोई उदवर्तन धीरे अंग लगाई।।
कोई जलदारे कोई निरवारे पंचामृत अवगाई।।९।।
कोई सर्वोषधि कोई महौषधि तिलतिल नेह बढ़ाई।।
पुष्पफल रत्न गंध संपन्न सुघट सहस्र झर लाई।।१०।।
आये स्नान अंग पोंछे पुनि सिंहासन बैठाई।।
पीरौ जामा सुभंग पजामा दुपटा पाग झुकाई।।११।।
मोरमुकुट सिर किंकिणी कटि घेर कुंडल हार धराई।।
बेंदी बेसर तिलक सुकेसर नासा मुक्त छबि छाई।।१२।।
दामनप्यारी लगी किनारी मनभावन भरमाई।।
सुन्दर सारी लगी जरतारी कंचुकि छबि दरसाई।।१३।।
वेणी जूड़ो कर में चूड़ी चन्द्रिका सिर चहचाई।।
नथमें लटकन प्रिय मन अटकन झूमक करन भ्रमाई।।१४।।
करपद महंदी चिबुक सुबेंदी प्रियनैना उरझाई।।
बिछिया नूपुर आतसु मधु सुर जावक अति सुथराई।।१५।।
सिर पै दूर्वा धरी है अपूर्वा अंजन दृगन लगाई।।
करि बहु रक्षा सखि जन दज्ञा दाई लवन उड़ाई।।१६।।
फूलन माल धूप अनुरूप मणिन दीपक दरसाई।।
भोजन विविध संखीजन अरपें दोऊजन रुचिसों पाई।।१७।।
श्रीयमुना जल प्यावत निर्मल वीरी देत बनाई।।
प्रानवारती करत आरती तन मन नैंन सिराई।।१८।।

करत है दरसन पलकन परसनं वर्ष कोटिपल जाई।।
क्षणक्षण में रुचि बाढ़त है सुचि अनुपम रूप निकाई।।१९।।
श्रीगुणमंजरी वेगि कृपा करि लीनी निकट बुलाई।।
ललित किशोरी तृषित चकोरी निरखत दृगन अघाई।।२०।।

राग सूहो विलावल

दृग सुख लेओ री आली आस पुजाइये।।
सखियन देओ रीआली आस मन हलसाइये।।१।।
वेष बनाओ री आली निरतत चालिये।।
कुसुम विथोरो री आली पथि सुगमाइये।।२।।
सुविथार कुसुमनि नवल वृन्दा विपिन कुंजन आइये।।
लेपि चंदन सुरभि बेंदी सुभग चौक पुराइये।।३।।
तह चारु चौकी निखिल मणिमय वर वितान तनाइये।।
रोपि कदली स्तंभसुन्दर बंदन माल बंधाइये।।४।।
कलस धराओ री आली दीपक वालिये।।
दुहु अभिसा रोरी आली विहँसि मिलाइये।।५।।
श्री श्रीवृन्दावन आली सुख दरसाइये।।
राज सुहावन आली रसिकन भाइये।।६।।

भाइये अभिषेक करि सिंगार दुहुं बैठाइये।।
करहु कुंकुम तिलक हिलमिल मोतियन अक्षत धराइये।।७।।
नारियल नव हेम मुद्रा मोदकन दरसाइये।।
करत नौछावरि रतनमणि रूप लखि न अधाइये।।८।।
मंगल गाऔ री आली जंत्र मिलाइये।।
सुरन उड़ाओ री आली अति सुख पाइये।।९।।
करहु समीर री आली विजन ढुराइये।।
जंत्रन नीर री आली उच्च छुड़ाइये।।१०।।
छुड़ाइये जलतंत्र मानों मुक्तवेलि बटाइये।।
जल बिन्दु मृदु मृदु अंग लागे परम सीतलताइये।।११।।
विविधि रस को भोग धर के श्रीयमुना जल प्याइये।।
जुगल अधरन अरपि वीरी आरतौ बलिजाइये।।१२।।
शुभ वैसाख री आली दिवस मनाइये।।
फूले शाख री आली ललित लता लिये।।१३।।
देहु असीस री आली जबहि उचारिये।।
धारहु सीस री आली पद जो पाइये।।१४।।
पट धारि सीमन नृत्य कीजे जुगलचन्द रिझाइये।।
लेत गति अति नई रतिसों आनन्दको उर लाइये।।१५।।

यह विधि श्रीराधारमणजी की प्रगटलीला गाइये।।
सेवन निपुण गुणमंजरी करुणा कटाक्षन पाइये।।१६।।

राग सारंग

प्रगटे श्रीराधारमण आज।।
श्रीगोपालभट्ट मनभाये सफल भये सब काज।।
वृन्दावन नागर रस सागर गुण आगर जुबराज।।
जुगल रूप एक मिलि दरसे हरषे रसिक समाज।।१०।।

राग सारंग

सखी री आज भये मन भाये।।
राधारमन सिंहासन बैठे पंचामृत में न्हाये।।१।।
लावन्यामृत दूध धार में वारुणी दधि लपटाये।।
स्नेहामृत घृत चिक्कण श्रीतन मधु माधुर्य चुचाये।।२।।
निज अनुराग सिता के रस में भीजत हैं सचु पाये।।
गौर अंग में श्यामरंग पट श्याम गौर दरसाये।।३।।
भूषण भाव तिलक शोभा को अरु सौभाग्य लगाये।।
लोचन कमल कटाक्ष माला क्षण क्षण में निरमाये।।४।।

अंग सुगंधि धूप निरधूमिन कान्ति दीखि छवि छाये।।
रूपामृत व्यंजन अधरामृत जल पीवत न अघाये।।५।।
मृदु मुसिक्यान पान की बीरी अद्‌भुत रंग रचाये।।
प्राण वारती करत आरती अलि दृग जल ढरकाये।।६।।
श्रीललितादिक सकल सखीजन,
निरखि निरखि सचु पायें।।
रूपमंजरी संग गुणमंजरी बारंबार बलि जाये।।७।।

लाल को कमलमुख निरखें रणिकेश।।
श्रीभट्ट गुसाईं प्रगटी रसरीति।।
आये श्रीरूप सनातन गावें मंगलगीत।।
माधुरी लता कुंज में भई भ्रमरन की भीर।।
लहरें श्रीजमुनाजी की चलत मंद समीर।।
मिलि श्यामघन में दामिनी भामिनी अति धीर।।
गुणमंजरी गुणगावै बहै नैनन नीर।।

राग टोडी

बधाई में दीजे श्रीबनवास।।
तुमरे श्रीराधारमण प्रगट भये पूनो माधौ मास।।

सुनिये श्रीमद् भट्ट गुसाईं मेरी यह अभिलाष।।
जुगलदास के पास रहो नित गावों तव गुण रास।।१२।।

रास आसावरी

श्रीगौरचन्द्र उपदेश पाय आनंद भरे।।
तब छोड़े दक्षिण देश प्रभु अनुकूल करे।।१।।
श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी श्रीवृन्दाविपिन बसे।।
तब भेजो अंतरयामि आसन माल लसे।।२।।
पूजे श्रीशालिग्राम भावन मांग पगे।।
उचरें निस दिन हरिनाम अश्रु पुलकि जगे।।३।।
तब निज कर करन सिंगार उत्कंठा जु बढ़ी।।
प्रभु हे वृजराज कुमार दरसौ भानुलली।।४।।
निरखूं रसिकन के भून नैनन त्रास हरे।।
वह ललित त्रिभंगी रूप मुरली अधर धरे।।५।।
करूं सेवा तुम रुचि जान उचित समय जोई।।
तुम बिन नहिं आवै आन पल जुग सम होई।।६।।
अब करो विलम्ब न श्याम प्यारी रंग रंगे।।
प्रगटो मूरति अनुपाम माधुरी अंग जगमगे।।७।।

इत्यादिक किये प्रलाप सबनहिं जात कहैं।।
तब शालकुंज ते आय प्रगटे मनहिं गहे।।८।।
हिय प्रियारूप कों धारि श्रीजी अति विख्यात।।
सब लोकन संग निवार वे ये एकहि गात।।९।।
भट्ट आवत जमुन नहाय मंगल सगुन भये।।
तब आये बेगिहि धाय अति आनन्द छये।।१०।।
लखो लालन रूप अनूप बन छवि छाय रही।।
ये तो हैं निकुंज के भूप दृगन जल भीजि मही।।११।।
निज सेवक गोपीनाथ घट भरि लाय धरें।।
तिन बोल दिखाये नाथ लोचन रूप अरे।।१२।।
गोपी गोस्वामी बोल कै अभिषेक बिधि।।
बांधी बन्दनवार अमोल केला केल निधि।।१३।।
रही ध्वज पताक फहराय पूरण कलस धरे।।
धरे घृत दीपक सुबलाय दिक बंधन जु करे।।१४।।
भट प्रभु कटि पकरे हाथ इक कर चरन छियें।।
प्रभु बिलसी मेरे हाथ ऐसे कहें हियें।।१५।।
अभिषेक सनातन संख करै लै दूध दही।।
घृतमधु सरकरा ससंक है मृदु अंग जही।।१६।।
श्रीरूपज भरि भरि देत जीवज वेद पढ़ें।।
श्रीरघुनाथ भट्ट प्रभु हेत लिये छत्र खड़े।।१७।।

श्रीलोकनाथ रघुनाथ करत हैं चमर सजे।।
श्रीकृष्णदास के हाथ घंटा मधुर बजे।।१८।।
श्रीगोपीनाथ श्रीनिवास पंखा करत सुखी।।
जहाँ नांचें श्रीहरिदास भूगर्भादि मुखी।।१९।।
बाजे झालर झांझ मृदंग दुंदुभि भेरि महा।।
जय जय धुनि भई इकसंग कहें बलिहार तहां।।२०।।
फिर प्रभु भीतर जाय पोंछत हरे हरे।।
तब सिंहासन बैठाय करे सिंगार वरे।।२१।।
निज सेव्य श्रीराधा नाम तिन सिंगार रच्यौ।।
तब जुगल रूप विश्राम रसिकन कों जु सच्यौ।।२२।।
रच्यौ केशर तिलक ललाट मांथे दूव धरी।।
तब अंजन नैन विशाल दीनो सुभग धरी।।२३।।
तब राई नौन उतार कंकन कर बांधे।।
पहराये फूलन हार अतर छिरक साधे।।२४।।
कर धूप दीप तिहि वार भोग धरो आगे।।
सीतल जमुना को वारि अरपो अनुरागे।।२५।।
दई बीरी ललित बनाय आरतो करो बड़ौ।।
तब सब मिल मांथों नाय स्तुति मंत्र पढ़ो।।२६।।
धेऐ राधारमण नाम सबन आसीस दई।।
विलसौ वृन्दावन धाम करन वचन लाई।।२७।।

परम उदार श्रीभट्ट गुसांई दई हैं धेनु द्विजन।।
प्रभु के श्रीकरन छिवाय तिल हू दिये हैं सुजन।।२८।।
आये वर ब्रजनारि देखत भये हैं चकित।।
गावें पद कंठ सुधारि श्रीगोस्वामीजी को सुकृत।।२९।।
सब इकटक रहे निहार लगे नाहीं जू पलक।।
भूली है देह सँवार प्रेम रह्यौ सु झलक।।३०।।
तब दिये सबन कों चीर धारत अंग भले।।
दीयौ पंचामृत धीर लै निज भवन चले।।३१।।
तब नांचे सकल स्वरूप गावत छिरकत अंग।।
सब मिटी बिरह की धूप आनंद झलकत अंग।।३२।।
मिले सब गुपाल भट्ट जाइ वचन जु नहिं फुरै।।
तुम यह दिन दियो दिखाय कहि कहि अश्रु ढरै।।३३।।
करें भट्टगुसांई प्रणाम सबन के चरण परे।।
यह गौर भक्त अनुपाम करुणा नहिं बिसरे।।३४।।
तब राजभोग अरपाय आरती भई सयन।।
सब मिलि प्रसाद को पाय रूप छके हैं नयन।।३५।।
पूरे हैं सब मन काम सुन्दररूप लखे।।
अब नहीं कहीं सुखठाम और जु नाहिं चखे।।३६।।
गुणमंजरि दासन दास पंखा टहल दई।।
पूरी है मन अभिलाष संका सकल गई।।३७।।

राग गौरी

आज बधायो श्रीगोपाल के अहो हेली निरखो आनंदकंद।।१।।

मास माधौ पूर्णमासी भानुसुत को वार।।

दिशा नक्षत्र प्रगटे श्रीराधारमण सुकुमार।।२।।

रचो वेदी चौक पूरौ पूर्णकलश धराय।।

तन वितानन कदलि खंभन बन्दन माल बंधाय।।३।।

ध्वत पताक सुहामनी रंग रंग रापी आय।।

करत कीर्त्तन श्रीयमुनजल घट भर लाये धाय।।४।।

श्रीसनातन रूप श्रीरघुनाथ भट्ट गुसांई।।

सुनत जीव गुसांई धाये दास गुसांई मनभाई।।५।।

लोक नाथ भूगर्भ काशीश्वर मुख श्रीहरिदास।।

और रसिकन मंडली की पूरी है मन की आस।।६।।

करि महा अभिषेक विधि सौं फूले अंग नसाय।।

पीतपट पहराय भूषण कियौ है सिंगार सुहाय।।७।।

पाग दहिने दूव बाँये मोरपक्ष छवि देत।।

कियौ कुमकुम भाल तिलक वलैया क्षनक्षन लेत।।८।।

बाँधि रक्षा भोग दधि तिल फूल धरे पकवान।।

आचमन दे दई बीरी आरतौ कीनो आन।।९।।

देत सबहिं असीस मिलिकें सदां बिलसो श्याम।।
प्राणप्रिया समेत जुग-जुग श्रीवृन्दावन धाम।।१०।।
करै नृत्यन वैष्णवन कौं समूह अति रसरंग।।
धाये ब्रज नरनारि देखन प्रेमानन्द तरंग।।११।।
मुदित श्रीगोपालभट्ट पदमाल देत प्रसाद।।
दास गुण को वास श्री बन दीजै पूजे आस।।१२।।

राग कान्हडी

श्रीराधारमणजी प्रगट भये सब दुःख दूर गये।।
श्रीवृन्दावन बजत बधाई रसिकन मोद छ्ये।।१।।
श्रीगोपालभट्ट करुणाकर यह सुख सवन दये।।
गुणमंजरी छबि बरनी न जाई नित अनुराग नये।।२।।

राग झंझोटी

बाजै आली बधाई।।
शालिग्राम ते प्रगट भये ललित त्रिभंगी सुखदाई।।
गावें मंगल गीत मंडली रसिकन की धाई।।
राधारमण लखत गुणमंजरि नैनन फल पाई।।

राग झंझोटी

अति मुदित भये श्रीभट्ट गुसांई फूले अंग न समाई हो।।
राधारमण लालजी प्रगटे बाजत रंग बधाई हो।।
अद्भत रूप अनुपम निरखे सकल विपिन छबि छाई हो।।
गुणमंजरी की आस पुजाई दोऊ कर लेत बलाई हो।।

राग सोरठ

श्रीवृन्दावन धाम हमारो हो।।
गौर श्याम तन एक महाप्रभु जिन शुचिरस बिस्तारो हो।।१।।
ठाकुर इष्ट श्रीराधारमण रसिया नन्ददुलारौ हो।।
स्वामिनि श्रीवृषभान नंदिनी अरुण नील पट धारो हो।।२।।
गुरु आचारज श्रीगोपालभट्ट रूपसनातन प्यारो हो।।
जुगलकुंड संकेत नाम बरसानो नंद अगारो हो।।३।।
गोवर्द्धन गिरिवर श्रीजमुना तीरथ प्राण अधारो हो।।
श्रीललितादिक रूपमंजरि गुणमंजरि नाम उचारो हो।।४।।

राग बरवै

आज श्रीराधारमण प्रगट भये हैं हो।।
बाजत रंग बधाई।।

भट्ट गुंसाई तन मन फूले हो रसिकन के मनभाई।।
मोर मुकुट पट पीत मुरलि छवि हों लखि दृग पलकन लाई।।
वाम भाग में प्रिया बिराजै हो गुणमंजरि बलिजाई।।

२२. राग कान्हरो

बाजे रंग बधाई श्रीगोपालभट्ट धाम।।
राधारमण लालजी प्रगटे ललित त्रिभंगी श्याम।।
अंग-अंग छबि बरनि न जाई अति अद्‌भुत अनुपाम।।
प्रिया कान्त निज उर में धारी गुणमंजरी विश्राम।।

२३. राग सोरठ

नौबत बाजे गहगही हेली सरस सुरन सहनाई।।१।।
बाजत बीन मृदंग वर हेली, बीन ताल मुँहचंग।।
झांझ सरंगी रसभरी सुख भरत श्रवण इकसंग।।२।।
बैशाखी पूनो सुखद शुभदिन घड़ी मंगल जाम।।
श्रीगोपालभट्ट के लाड़िले प्रगटे हैं सुंदर श्याम।।३।।

श्रीराधारमण नाम है जिन रूप रह्यौ बनछाय।।
द्रुमबेली प्रफुलित सबै मधुरावलि मधुरे गाय।।४।।
सखि नाचत शुक सारिका पिक करत नाम उच्चार।।
सबहीं आनंदित भये हेली वहै दृग आँन दवारि।।५।।
इतनी सुनि ब्रजनागरी तब चलीं उमंग सुकुमारी।।
प्यारे दर्शन कारने कर लीने मंगल थार।।६।।
झुंडन झुंडन नबवधू पहरें पटभूषण अंग।।
गावत मंगल गीत मिल हेली बरसत है रसरंग।।७।।
रूप अनूपम लाल को लखि चकित भईं सब बाल।।
लेत बलैयां दुहुन कर नाचत हैं दै दै ताल।।८।।
अपने-अपने भाव सों अरपन कीने उपहार।।
अश्रु ढरक दृग पुलक तन हेली रही न अंग सम्हार।।९।।
परिकर प्राण सप्रिया सहित नित सुख बिलसो निज धाम।।
देह असीस सबै बधू हेली पूरन भये मनकाम।।१०।।
निज-निज भवनन को गईं सब धारि प्रसादी चीर।।
गुणमंजरि गावत भली फली लता प्रेम की बीर।।११।।

रेखता

चल देखिये वृन्दावन जहाँ बजै रंगीली बधाई।।१।।
आई हैं वैष्णव श्रेणी लीये मृदंग झांझें।।
गावें हैं मंगला तानें भट्टजू के मन्दिर माँझें।।२।।
प्रगटे श्रीराधारमण इन्द्रमणिश्याम तन।।
मुसिक्यान सोहै मुखें कोटि काम की दमन।।३।।
ललित त्रिभंगी रूप रसिकन के हैं भूप।।
गुणमंजरी जीवन धन छवि कहा कहूँ अनूप।।४।।

२५. राग कान्हरो

मोहि दीजै श्रीभट्ट गुसांई। वृन्दावन बास बधाई।।
तुम्हारे श्रीराधारमण सुख बिलसों ब्रजभूषन सुखदाईं।।
देहुं बुहारी करि मनु कारी चितनहिं जाय चलाई।।
गुणमंजरी दास करि राखो भाखों नाम सदाई।।

२६. राग सोरठ

अति आनंद भयौ है वृन्दावन आजें।।
श्रीगोपालभट्ट मन्दिर में जुरे हैं सकल समाजें।।१।।
वैष्णव कीर्तन करते आवें लै मृदंग अरु झांजे।।
गोस्वामी श्रीरूपसनातन जीव प्रेम में गाजें।।२।।
सिंहासन बैठे प्यारी संग रूप अनूपम छाजें।।
राधारमण नाम गुणमंजरि रसिकन के सिरताजें।।३।।

२७. कान्हडो

श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी रसिकन में नांच रहे हैं हो।।
श्रीराधारमण लाल को लखि लखि नैनन नीर बहैं हो।।
रूप सनातन शोभा बाढ़ी कर सों करन गहैं हो।।
गुणमंजरी दास की आसा पूरी दरस लहे हैं हो।।

२८. कान्हडो

भट्टजी के आनंद उर न समाय।।
आये सकल रसिक जन धाय।।
राधारमणलालजी की शोभ निरखत नाहिं अघाय।।१।।

अंग-अंग सुकुमार शोभा छवि विपिन रही छाय।।
ललित त्रिभंगी श्याम मनोहर कह्यौ वचन नहिं जाय।।२।।
वृन्दावन की संपति सुखनिधि मंद मधुर मुसिक्याय।।
गुणमंजरी स्वामिनि के प्यारे विलसो लऊं बलाय।।३।।

२९. श्रीभट्टगुसांई दीजै मोहिं बधाई

प्रगटे श्रीराधारमण मनोहर रसिकन के सुखदाई।।
युगल चरण अनुराग निरंतर सेवा करन अधाई।।
श्रीवृन्दावन बास रास रस गुणमंजरी बलि जाई।।

३०. श्रीराधारमण लाल कछु दीजे

अपनी प्राणप्रिया परिकर की दासीगणना कीजै।।
और कछू नहीं चाहों चित में यह बिनती सुनि लीजे।।
श्रीगुणमंजरी के ताते हृदय प्रेम में भीजै।।

३१. जलयात्रा

लखत श्रीराधारमण फुहारे।।

कबहूँ हजारा कबहुं इकधारा कबहुं कुंज अकारें।।१।।

बैठि लता सुन्दर सीतल जल कण अंगन धारें।।

नृत्यकरत फल निरखें पहिरें पट भूषण सुकुमारे।।२।।

सुन्दर फल पावत मिश्री को पनों पियें दोऊ प्यारे।।

गुणमंजरी गुलाब नीर को छोड़त हैं पिचकारे।।३।।

३२. रथयात्रा

श्रीराधारमण मनोरथ में बैठे प्रगटत केलि मनोज।।

बाढ़ विशाल अषाढ़ मास में शुकलपक्ष सुन्दर शुभ दौज।।

शोभाभरे धरे कंचन घट परसत सुन्दर सुभग उरोज।।

गुणमंजरी मुसिक्यानमान लखिदृग खंजन तिय बदन सरोज।।३३।।

३३. वर्षा वर्णन

श्रीराधारमण लखत हैं बादर।।

काले पीले हरे अरुण सित बैठे कुंज लता दर।।

मनो मदन रंगरेज रंगीली गीली सुखवत चादर।।
गुणमंजरी बिजुरी चमके तब करत श्याम बहु आदर।।३४।।

३४. श्रीराधारमण लखत हरियारी।।

हरिणी नैन प्रिया के संग में हरे हरे पगधारी।।
हरी सुनहरी चूरी पहरी हार हिये सुकुमारी।।
गुणमंजरी निरखत हरी बिहरे लहर लेत तन भारी।।३५।।

३५. श्रीराधारमण घटान निहारें।।

नवलकुंज चौबारे बैठे खोलें सुरंग किवारें।।
दै गलबाँही पवन पुरवाई सन्मुख लेत फुहारें।।
गुणमंजरी हरि धनुष बतावें गावें सुरंग मलारे।।३६।।

श्रीराधारमण कुंजनव छातन।।

डोलत सखिन संग पटभीने लिये परस्पर गातन।।
सुंदर से संकेत बतावें कर कर ऊंचे हातन।।
गुणमंजरी घन गगन छ्यो है विलसत सुख बहु भांतन।।३७।।

श्रीराधारमण सुखद घन झड़ी।।

धन पिछली निसि सुख सों सोये सोने बूंदपड़ी।।
बात चलत नहीं बात कहन की काहू चित्त चढ़ी।।
गुणमंजरी गुरुजन भय गंजन गरजन घड़ी घड़ी।।३८।।

श्रीराधारमण रुचि जान, या पट नील की फहरान।।
यमुना तीर अधीर पवन तें सघनघटा झुकिआन।।१।।
गर्जन गगन सुनिर्जन बनमें लाल की मुसिक्यान।।
जैसिय जामिनि दमकत दामिनि भामिन डरपत वाम।।२।।
बरसन बूंदन सो कुच मूंदन परसत चतुर सुजान।।
झपट लपटि गई पिय उर स्यामा गुणमंजरि सुखदान।।३।।३९।।

श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी जी की धियोधियो
श्रावणकृष्णा पंचमी

श्रीराधारमण नृत्य करें।
प्राणप्रिया संग अति आनंद में अंशन भुजन धरें।।
बाजत ताल मृदंगमधुर सुर धियोधियो उच्चरें।।
गुणमंजरी सामन बदी पंचमी प्रगटी मोद झरें।।४०।।

हिंडोला

मधुर हिडोरना हो झूलें श्रीराधारमणलाल।।
श्रीवृन्दावन कालिन्दी तट ललित कदमकी डार।।१।।

पचरंग डोरि पटकी पटली हीरा जटित बिशाल।।
गलबाहीं दिये बाम छबीली नवलकिशोरी बाल।।२।।
झोटा देत विशाखा ललिता चित्रा लिये रुमाल।।
गावें गीत तुंगविद्याजू चम्पक बसन सम्हाल।।३।।
बीरी देत इन्दुलेखा रंगदेवी चमर रसाल।।
विजन डुलावत सुभग सुदेवी श्यामा देत है ताल।।४।।
नृत्यत लवंगमंजरी अर्पे रूपमंजरी माल।।
रसमंजरी मृदंग बजावै रतिमंजरी पुष्प उछाल।।५।।
वीणा लिये विशाल मंजरी कस्तूरी पलकन वाल।।
मंजुल छवि लखि अतर लगावै गुणमंजरी गुपाल।।६।।४१।।

श्रीराधारमण हिंडोले झूलें।।

श्रीवृन्दावन सघनकुंज में कालिन्दीके कूलें।।१।।
उरझे हार अलक कुंडल मिल निरखि निरखि मन फूलें।।
प्यारी पहरें पचरंग सारी लालन सुरंग दुकूलें।।२।।
गावत राग मल्हार मधुर सुर अरस परस मन तूलें।।
गुणमंजरी सुमन बरसावत मंद हँसनि लखि भूलें।।३।।४२।।

श्रीराधारमण झूलें रंग हिंडोरे।।

रतन जटित को बनो हिंडोरो बोले चातक मोरे।।
प्राणप्रिया संग गलबाहीं निरख नैन की कोरें।।
गुणमंजरी देत हैं झोटा रमक झमक चित चोरे।।४३।।

निरख राधारमण झूलें, मुदित श्रीयमुने कूलें।।१।।
झुलावत सखी अति हरषें, चहुं दिश सुमन को बरषे।।२।।
बजावें वीणा मिरदंगी, ताल मुँहचंग सारंगी।।३।।
मधुर मल्लारसुर गावें, प्रियाप्रिय सुखन उपजावें।।४।।
घटा आवत घुमड़ घिरकें, फुहीं बरसत जु फिर फिरके।।५।।
बीच बीच दामिनी कोंधें, भामिनी दृष्टि चकचौधें।।६।।
लपट गई लाल सों प्यारी, कहत सबही जु बलहारी।।७।।
जयति गुण मंजरी बोलें, जुगल छबि नयन में तोलें।।८।।४४।।

लखि छवि होउ निहाल।।
झूलें श्रीराधारमणलाल।।

श्रीगोपालभट्टजू के लाड़िले चंचल नैन बिशाल।।
गावत राग मलार सखीजन बाजत बीन रसाल।।
श्रीगुणमंजरी हरषि झुलावें हाथ लिये रूमाल।।४५।।

आज श्रीराधारमण रंगीले हो झूलत फूलत मन में।।
प्रिया अंश पर भुजा बिराजें हो पुलकित प्रमुदित तन में।।
झोटा देत सिहात सखी सब ही निरख तरंग मुसिन में।।
गुणमंजरी कुसुम बरसावत हो गावत कुंज भवन में।।४६।।

पवित्रैकादशी

श्रीराधारमणलाल पवित्रा पहरें।।
लाल हरित सित पीत गुलाबी शोभित बरण सुरहरें।।
कंचन हार गुंथो गोपीजन लखि आनंद उर लहरें।।
गुणमंजरी मनोरथ पूरे झूलत उरमें फुहरें।।४७।।

सलूनो (राखी)

श्रीराधारमणलालजू के कर
वृन्दादेवी बांधत राखी।।
सुभग सलूनो दिवस मनायो
मधुर-मधुर आशिष बर भाखी।।
केशर तिलक लगाय लाल ललना
छवि लखि निज उरमें राखी।।
गुणमंजरी झुलावत दुहुं पुनि
गावत सुरन मुजी अभिलाखी।।४८।।

जन्माष्टमी

श्रीराधारमण जन्म की आठें।।

परम महा मंगलदिन
सजनी लागे आनंदठाठें।।१।।
शाण्डिल्य भागुरी कर
अभिषेक वेद के पाठें।।
पीत बसन पहिराय तिलक
कुमकुम करि दक्षिणा बाटें।।२।।
बाजे बजत विविधि नाचत
गुण बरनत बिरदन भाटें।।
गुणमंजरी तन मन धन
वारत निरख बरस की गाठें।।३।।४९।।

श्रीराधाष्टमी

श्रीराधारमणजी तनमनफूले प्रिया जन्मदिन जानी।।
कियौ सिंगार आपने कर तें प्यारी को सुखदानी।।१।।
मृगमद कुमकुम तिलक भाल पै रच्यौ परम रुचि जानी।।
नृत्यत नटनागर अति गतिसों गावत मधुरी बानी।।२।।

हार उतार देत निज उर तें अंग अतर में सानी।।
गुणमंजरी वीरी सखियन को बांटत मृदु मुसिक्यानी।।३।।५०।।

श्रीराधारमण बधाई दीजै जो मांगू में आज।।
तुम्हारी प्रिया की जन्मगांठ है नहीं करो अब लाज।।५१।।
प्यारी चरन कमल की दासी करो रसिक सिरताज।।
गुणमंजरी के नाते मोकों राखो कुंजन मांझ।।५२।।

सांझी

श्रीराधारमणलाल प्यारी की निजकर सांझी चीतत।।
सखी भेष धरि रसिक शिरोमणि बिलसत हैं सुख की तत।।
रीझत प्यारी रस में भीजत रजनी रस में बीतत।।
गुणमंजरी मन हरत सखिन के कोटि काम छवि छीजत।।५३।।

दशहरा

आज दशहरा दिवस सुहायो।।
श्रीराधारमण लाल को सखियन बर सिंगार धरायो।।
नवल प्रीति अंकुर जब टांके कुमकुम तिलक बनायो।।
गुणमंजरी मानगढ़ जीतो प्रिया बिहार बढ़ायो।।५४।।

शरद पूर्णिमा

श्रीराधारमणो नृत्यति रासे।।

सघने श्रीमद् वृन्दाविपिने यमुना पुलिनोल्लासे।।

परम सुखदया श्रीराधिकया घृतकर पद्म बिलासे।।

बंशीवादन कुन्क्टिस्थित प्रिय गुणमंजरी दासे।।५५।।

दीवाली

श्रीराधारमण खेलत चौपर।।

सरस दिवाली रजनी सजनी सुख बिलसत सर्वोपर।।

पांसे फेंकन गोट धरन छवि कही जात नहीं मो पर।।

गुणमंजरी बिचारत दोऊ बाजी अटकी पौ पर।।५६।।

आली आई आज दिवाली।।

श्रीराधारमण संग चौपर खेलें श्रीकीरत की लाली।।

हठरी पूजन नवल भेष धरि फैली दीप उजाली।।

गुणमंजरी पकवान प्रसादी देत हैं भर-भर थाली।।५७।।

अन्नकूट

श्रीराधारमण आरोगत अन्नकूट आली।।

आए जगमोहन में सुन्दर सुख सोहन में धनुषी वर
भोंहन में रंग बरसत भाली।।

पहने हैं बागो तास मन में भर आत हुलास रजनी
सुन्दर बिलास सूचत रस ख्याली।।२।।

पूजे श्रीगोवर्द्धन संग लिये परिकर जन शृंगारी
सुरभी गण सोहत तिहि काली।।

बाँटत हैं विविध भोग लेत हैं वृजवासी लोग भयौ है।।
बांछित संजोग दिवस सुख बिशाली।।३।।

सुरभी घृत सों चुचात मीठो केसरी भात मूंग भात
कढ़ी साथ खात कनक थाली।।

मूंग उड़द चना दाल रायते हैं सरस झाल बरा रस
पकौरी लाल चाखत सुखसाली।।४।।

मिश्री फुलका जु खीर पावत हैं रसिक धीर परसत
हैं सखी भीर शोभा उजियाली।।

नाना विजनन स्वाद लीनो निज मन अल्हाद देत हैं
प्रसाद शेष गुणमंजरी पाली।।५।।५८।।

गोपाष्टमी

श्रीराधारमण किये नटवर भेष।।
गोपाष्टमी आली शोभा बड़ी विशेष।।
जूरो मुरली लकुट काछनी कछि सिंगार कू देख।।
गुणमंजरी निर्योग पास शृंगार चित में लेख।।

देवोत्थान अथवा प्रबोधन

आज प्रबोधिनी निसा रंगीली नाचत राधारमण खरे।।
होड़ा होड़ी करत प्रियासंग।।
अंग अनंग तरंग धरे।।
सखियन चौक रचे हैं जहाँ जहाँ तहाँ तहाँ अति
गतिहि भरें।।
गुणमंजरी ईख की कुंजनि सुख पुंजनि विलसें विहरें।।६०।।

श्रीदामोदर गोस्वामी कौ उत्सव कार्तिक शुक्ला १५

आई है कार्तिक पूनो लखि राधारमण लाल।।
लीनी दामोदर सेवा निज जन प्रतिपाल।।
राचो है रास रसीलो संग मोहिनी बाल।।
गुणमंजरी बजावै गावै सुखरयों ख्याल।।६१।।

समय खिचरी के पद

सखी श्रीराधारमण मनरंजन।।
ओढ़ लवा दो खिचरी पार्मे संग बहुत धर व्यंजन।।
अतर सुगंधित धरी अंगीठी मीठी शीत विभंजन।।
गुणमंजरी श्रृंगार रस में बलिहार करत कर कंजन।।६२।।

खिचरी सहचरी प्रात राधिकारमणजी को सुरभी को
घृत डार थार आगे लाई।
कचौरी अचार चार साग धरे तापर पापर कचरी दधि
मोदक मलाई।।
मीठी-मीठी बात करे दीठि सों दीठि भरे अंगीठी सुगंध
धरे सीत बीत जाई।।
चौकी पे बैठे आन रुचि सों लगे खान प्रान वारती
सुआरती करत आईं।।६३।।

खिचरी जेंमत श्रीराधारमण
श्रीगोपालभट्ट जीवन धन।।
गादी बिछी धूपकोमल में
बैठे तने बितानन बीनन।।१।।

कनक अँगीठी अतर सुगंधित निकट

घरी लागत मीठी तन।।

सुबरन झारी सुचि बारी

भर लसत जगमगे जटित सु रतनन।।२।।

ओर पास उपहार मध्य में

कंचन थार धरो है सखीजन।।

प्राणप्रिया को मुख अवलोकत

घूंघट मध्य न तृप्त होत मन।।३।।

नव अनुराग लाज भरी प्यारी

मोरत बदन लेत नग्रासन।।

सामिग्रिन की करत परिक्षा

चाखत लालन प्यारी कारन।।४।।६४।।

श्रीराधारमण लाल जी की खिचरी

जेंबत मेवा मिली घृत निचुरी।।१।।

माखन दधि चटनी लोंजी धर।।

साग कचरिया टेंटी पापर।।२।।

आम आमरे नीबू अदरक।।

धरे छुहारे किसमिस निधरक।।३।।

बरा रसबरा मूंग पकौरी।।
बेसन की बैंगन मिली तोरी।।४।।
तिलम्बरी तिलमठरी तिरकोना।।
गुझिया सेब सलौने निमौना।।५।।
मूंग उरद बेसन नुकती के।।
मोदक पाव भावते जी के।।६।।
दाड़िम दाख अंगूरी फल को।।
बूरे मिले नरंगी दल को।।७।।
रची रुचिर तरकारी रतालू।।
बेंगन भुरता भूने आलू।।८।।
बिच बिच झारी भरि श्रीयमुना जल।।
गुणमंजरी प्यावत मुख निर्मल।।९।।६५।।

शीत

श्रीराधारमण दुशाला पीत।।
ओढ़े लाल लबादो बांधे पचरंग चीरा पीत।।१।।
हरी अँगरखी रूमाल जरकसी बांधौ कटि लखि शीत।।
सूथन अतलस रंग गुलाबी पहरी रस की रीत।।२।।

खीन खाप दामन प्यारी जू दुलाई नील सुनीत।।
गुणमंजरी गुलाबी दुशाला उढायो लालन मीत।।३।।६६।।

श्रीराधारमणजू पहरे मोजा।।

मखमल लाल रचे अति सुंदर लसे काम जरदोजा।।
शीत समें सुखदाई प्यारे लागत चरण सरोजा।।
गुणमंजरी अस्तीन लखे जब उझलत केलि मनोजा।।

श्रीराधारमण अँगीठी तापें

अपनी प्राणप्रिया छबि निरखत बैठे हैं पलका पै सुन्दर।।
अगर सुगंध लेत हैं मधुर-मधुर आलापें।।
गुणमंजरी रजाई ओढ़न निरख लगत पलका पै।।६८।।

श्रीगोपीनाथ गोस्वामीजी को
उत्सव पौष शुक्ला
प्रगटी गंधमंजरीगोपी।।

वाली बैस कुंज सेवा हित कुल मरजादा लोपी।।
मनहुं बसंतादिक उत्सव की शुभ बिध अंकुर रोपी।।
श्रीगुणमंजरी निज अपनाई पिय प्यारी चित चोंपी।।६९।।

बसंत

श्रीराधिकारमणजी नवबसंत

खेलत वृन्दावन नित लसत।।१।।

प्यारी जी शोभित सखिन संग।।

लखि नागर मन बाढ़ी उमंग।।२।।

अलबेली प्रथम ही लै गुलाल

मूठी भरि छोड़ी है मुखहि लाल।।३।।

नागर मानत हैं धन्य धन्य

सब रसिकन में हैं अग्रगन्य।।४।।

श्यामा मुख अतर लगाय गाय

निरखत हैं शोभा समय पाय।।५।।

सखियन पर दिये कुमकुमा दोर।।

छवि को नहीं तहाँ ओर छोर।।६।।

बाजत वीणा मिरदंग ताल।।

ढप मुरली सारंगी रसाल।।७।।

गावत तहाँ हैं हिंडोलराग।।

गुणमंजरी हर्षित मन की लाग।।८।।७०।।

होली

श्रीराधारमण छैल गैल पिचकारी छोरे।।

केशर की तकि मारे सजनी सबरे अंगन बोरे।।

मूठ गुलाल लाल कर देत है लाल सकुच को तोरे।।

आवत मुखमाडन धोरै।।१।।

अंग अनंग को वरषं भरो जोवन के जोरै।।

प्राणप्रिया की सैन पाइके लेतजु सबकि अकोरे।।

करै जो सो कछु थोरे।।२।।

लै कर ढपहि बजावै रसिया गावै गीत अप जोरै।।

भागन फागन आय गयौ है बोलत वचन कठोरे।।

पिये छवि नैन कटोरे।।३।।

होली को मिस पाय के हेली खेल करे सब ठौरे।।

गुणमंजरी प्रिया रंग में भरो होय सबै इक ठौरे।।

रसिक बर नंदकिशोरे।।४।।७१।।

राग सोरठ

श्रीराधारमण संग खेलहि होरी अतिहि उमंग भरी।।

धन्य दिवस है आज को हेली धनि निस जाम घरी।।१।।

लै पिचकारी कर कमल सुकुमारी भरत सुरंग।।
केसर की अति ताक में छोड़त पिय के अंग।।२।।
बरषत गौरघटा नव हेली पोषत श्याम तमाल।।
अति उमंग सो लेत उर यह देखौ अद्भुत ख्याल।।३।।
मूठ गुलाल की नागरी भरभर मारत पीय कपोल।।
कंकण झंकण बजतही हरिमल जु भयौ उतरोल।।४।।
नागरि मुखहि भिजोयवे पिय पिचकारी पुनिलेत।।
प्रिया बचावत नील पट मुरि मुरि मुसिकन सुखदेत।।५।।
होहो होरी बोलहीं सब सखी देत हैं ताल।।
कोऊ बजावै ढपहि लै कोऊ गावत रुचिर धमाल।।६।।
कबहुँक लाल भिजोवहीं सब पिचकारिन को छोर।।
भीजे अंग पिय के लखे तब तिय बरजत दृग कोर।।७।।
नवल बसन अंग पोंछके नव बागे दुहुं पहराय।।
नवभूषण पहराय रुचि पकवान देत पवाय।।८।।
श्रीजमुना जल प्याइकें पुनि पुनि बीड़ी देत सिहाय।।
करत प्रेमसों आरती वारत तऊ न अँघाय।।९।।
सिंहासन बैठे दोऊ हेली धरी सोंज पुनि खेल।।
गुणमंजरी पिचकार अतर तब भरत चतुर मणि छैल।।१०।।७२।।

श्रीमहाप्रभुजी कौ जन्मोत्सव

प्रेम सुधा की वृष्टि करी प्रगटे श्रीगौरहरी।।
नित्यानंद पतित पावन संग निज अनुराग भरी।।
देह देह अरु गेह गेह में सुपुलक अश्रु झरी।।
यह निज आस पतित पावन गुणमंजरी दास धरी।।

फूलडोल चैत्र कृ. १

श्रीराधारमण झूलत हैं डोल।।
हेली मोरपंख पंखा के रसमय जुगलकिशोर।।१।।
रूप अमल छाके बाँके दोऊ भरि भरि लेत अकोर।।
कोऊ गुलाल उड़ावै सहचरि गावै तान रसबोर।।२।।
कोऊ चमर डुलावै सजनी निरखि निरखि तृण तोर।।
गुणमंजरी गुलाबी बागो पहिरे छवि नहिं थोर।।३।।७४।।

फूलडोल चैत्र शुक्ला ११

राधारमण फूल के डोर।।
झूलत फूलत अति मनमाहीं गंध गुलाल अतोल।।

बसन गुलाबी पहरे दोऊ तैसी सखी रसलोल।।
गुणमंजरी गुलाब अतर अंग धारें करत कलोल।।७५।।

फूल बंगला

श्रीराधारमण फूल के बंगला।।
बैठे फूलन पट भूषण
अंग गावत हैं सुर जंगला।।७६
फूल अधिक मन शयन
करी पुनि उठे समय लखि मंगला।।७६
गुण मंजरी मुदित शोभा
लखि सरति काम भयौ कंगला।।७६।।

अखतीज

श्रीराधारमण लाल अखतीज।।
पहरें चन्दन बागो अंग में प्रिया प्रेमरस भीज।।१।।
देत असीस सखीजन जीवत बोवत सुख के बीज।।
सारंगा गावें सुख उपजावें पावें सीतल चीज।।२।।

पलक पवन की करे परस्पर दोऊ अंग पसीज।।
गुणमंजरि जल जंत्र भरत है लेत सेवा सुख रीझ।।३।।

इति श्रीराधिकारमण चरण सेवाधिकारी गोस्वामी
श्रीगल्लूजी महाराज कृत श्रीराधारमणजी के
वर्षोत्सव के पद

।।समाप्तम्।।

शुभमसंतु

कीर्तन

१

गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो।
राधारमण हरि गोविन्द बोलो।।

२

गोविन्द गोपीनाथ मदन मोहन।
जय-जय-जय श्रीराधारमण।।

३

गोविन्द मुखारबिन्द मोहन चरन।
जय-जय-जय श्रीराधारमण।।

४

गोपीनाथ वक्ष गोपाल प्राण धन।
जय-जय-जय श्रीराधारमण।।

५

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

श्रीचैतन्य गोस्वामीजी महाराज

अन्य उपलब्ध ग्रन्थ

- गागर में गीत सागर
- महात्म्य महिमा
- श्रीमद् भागवत कथा (सप्त दिवसीय)
- वृन्दावन दर्शन
- पतितपावन श्रीचैतन्य महाप्रभु चरित्र एवं दार्शनिक विचार
- भगवान् चैतन्य महाप्रभु स्तवन
- भगवान् चैतन्य महाप्रभु स्तवन (अंग्रेजी)
- भगवान् चैतन्य महाप्रभु सहस्रनाम
- श्रीराधाचरण गोस्वामी : व्यक्तित्व व कृतित्व (शोध ग्रन्थ)

प्राप्ति स्थल

श्रीआलोक कृष्ण गोस्वामी

षड्भुज महाप्रभु मन्दिर, राधारमण मार्ग, वृन्दावन-281121

फोन : (0565) 2442371, 2444171, 9837220377

Harinam 9837031415